खबर पेज 7 पर

MOHTA Publishing House

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष -12 अंक–20 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, बृहस्पतिवार 1 – 15 जनवरी 2026 मूल्यः 5 रुपये RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

- महानता कभी ना गिरने में नही है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।
- इस संसार में हर जगह खुशियां ही खुशियां है, बस देखने का नजरिया बदलो...
- कर्म एक ऐसा रेस्टोरेंट है जहां ऑर्डर देने की जरुरत नहीं है, हमें वही मिलता है जो हमने पकाया है।

शेरो-शायरी

- बहुत पहले से उन क़दमों की आहट जान लेते हैं तुझे ऐ ज़िंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं।
- किसी ने फूल से पूछा की जब तुम्हें तोड़ा गया तो तुम्हें दर्द नहीं हुआ फूल ने जवाब दिया तोड़ने वाला इतना खुश था की मैं अपना दर्द भी भूल गया!
- किसी को घर से निकलते ही मिल गई मंज़िल कोई हमारी तरह उम्र भर सफ़र में रहा।
- अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख़्वाबों में मिलें, जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें।

निपाह वायरस संक्रमण को लेकर बंगाल सरकार अलर्ट मोड पर

अनिवार्य किया गया 21 दिनों का क्वारंटाइन

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में निपाह वायरस संक्रमण को लेकर राज्य सरकार अलर्ट मोड पर आ गई है। स्थिति को ध्यान में रखते हुए राज्य स्वास्थ्य विभाग ने निपाह संक्रमित मरीजों, संदिग्ध मरीजों, उनके परिजनों और सभी स्वास्थ्यकर्मियों के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए हैं। यह गाइडलाइन पांच सदस्यीय डॉक्टरों की विशेषज्ञ टीम ने तैयार की है।दिशानिर्देशों के अनुसार, निपाह वायरस के मरीज या ऐसे व्यक्ति जिनमें निपा जैसे लक्षण हों, उनके रक्त, लार, शरीर के तरल पदार्थ या छींक-खांसी की बूंदों के संपर्क में आने वाले सभी लोगों को कम से कम 21 दिनों तक होम क्वारंटाइन में रहना अनिवार्य है। इसके अलावा, किसी संक्रमित मरीज के साथ बंद या सीमित स्थान में समय बिताना भी ''उच्च जोखिम'' की श्रेणी में माना जाएगा। ऐसे लोगों की विशेष निगरानी की जाएगी।21 दिनों के होम क्वारंटाइन में रहने वाले लोगों को दिन में दो बार स्वास्थ्य जांच करानी होगी। यदि इस दौरान बुखार, सिरदर्द, उलझन, खांसी या सांस लेने में कठिनाई जैसे लक्षण दिखाई दें तो तुरंत अस्पताल में भर्ती होना होगा। अस्पताल पहुंचने पर मरीज को सीधे आइसोलेशन वार्ड में रखा जाएगा, ताकि संक्रमण का खतरा कम किया जा सके। दिशानिर्देशों में स्पष्ट कहा गया है कि संक्रमित मरीज के कपड़ों या इस्तेमाल की वस्तुओं के संपर्क में आने पर भी व्यक्ति को 21 दिन निगरानी में रखा जाना चाहिए। इसकी वजह यह है कि वायरस सतहों और कपड़ों के जरिए भी फैल सकता है। निपाह संक्रमित या संदिग्ध मरीज की देखभाल करने वाले व्यक्तियों को पूरी सुरक्षा के साथ काम करना होगा। उन्हें मास्क पहनकर, पीपीई किट जैसी व्यक्तिगत सुरक्षा लेकर काम जारी रख सकते हैं।जिन लोगों में कोई लक्षण नहीं हैं, उन्हें सावधानी के तौर पर एक विशेष प्रकार की एंटीवायरल दवा लेने का निर्देश दिया गया है। जिन लोगों में निपाह जैसे लक्षण दिखाई देंगे, उन्हें तुरंत अस्पताल में भर्ती करना होगा। चूंकि निपाह वायरस के लिए अभी तक कोई निश्चित दवा उपलब्ध नहीं है, इसलिए मरीजों को डॉक्टरों के प्रयोगात्मक रूप से उपलब्ध दो वैकल्पिक एंटीवायरल दवाएं दी जाएंगी।राज्य सरकार ने निपाह जांच के लिए संबंधित मरीजों के नमूने तुरंत भेजने के निर्देश दिए हैं। दिशानिर्देशों में बताया गया है कि रिपोर्ट दिन में कम से कम दो बार नेगेटिव आने पर ही दवा बंद की जाएगी। स्वास्थ्यकर्मी यदि किसी संक्रमित मरीज के संपर्क में आते हैं लेकिन उनमें लक्षण नहीं हैं, तो वे मास्क और पीपीई किट पहनकर काम जारी रख सकते हैं।

बंगाल के राज्यपाल का बड़ा फैसला

आधिकारिक पत्राचार में 'भवदीय' की जगह पर 'वंदे मातरम' लिखेंगे

निज संवाददाता : बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने बड़ा फैसला किया है। उन्होंने कहा कि अब वो अपने आधिकारिक पत्राचार में 'भवदीय' की जगह 'वंदे मातरम्' लिखेंगे। इसके साथ ही उन्होंने सभी लोगों से गुजारिश की कि वो बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की इस मशहूर रचना को अपनी रोजाना गतिविधियों में शामिल करें। राज्यपाल के अनुसार, ऐसे प्रयास गीत से जुड़ी एकता, देशभक्ति और सांस्कृतिक गौरव के मूल्यों को बरकरार रखने में सहायक होंगे।

जानकारी के मुताबिक राज्यपाल ने कहा कि वह अपने आधिकारिक पत्राचार में परंपरागत रूप से प्रयुक्त होने वाले 'भवदीय' के स्थान पर 'वंदे मातरम्' लिखेंगे। लोक भवन के आधिकारिक सोशल मीडिया के जरिए से इस फैसले को शेयर करते हुए, एक अधिकारी ने कहा कि यह कदम बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित 'वंदे मातरम्' की चिरस्थायी विरासत और सांस्कृतिक महत्व से प्रेरित है।

अधिकारी ने कहा कि राज्यपाल ने अपने पत्रों के आखिर में 'भवदीय' की जगह पर 'वंदे मातरम्' लिखने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की इस प्रतिष्ठित रचना के प्रति श्रद्धा के प्रतीक के रूप में 'वंदे मातरम्' को अपने जीवन और दैनिक गतिविधियों में यथासंभव शामिल और आत्मसात करें।

गौरतलब है कि वंदे मातरम गीत की 150वीं वर्षगांठ के मौके पर बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस ने कुछ दिन पहले देशभक्ति और मातृभूमि के प्रति समर्पण का संदेश दिया था। उन्होंने कहा था कि वंदे मातरम सिर्फ एक गीत नहीं है, बल्कि यह देश भक्ति, विविधता में एकता और मातृभूमि के लिए काम करने की प्रेरणा देता है।

राज्यपाल ने अपने संदेश में कहा था 'मैं वंदे मातरम के माध्यम से लोगों में देशभक्ति, सामाजिक सद्भाव और मातृभूमि के लिए समर्पण की भावना जगाना चाहता हूं। यह गीत हमें याद दिलाता है कि हम सभी को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए देश की प्रगति और सुरक्षा में योगदान देना चाहिए'।

इस अवसर राज्यपाल ने यह भी बताया था कि वंदे मातरम केवल राष्ट्रगान का हिस्सा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और एकता का प्रतीक भी है। उन्होंने कहा था कि यह गीत हमें हमारे विविध सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में एकता और सहिष्णुता का संदेश देता है। उन्होंने बच्चों और युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें देशभक्ति और मातृभूमि के प्रति जिम्मेदारी की भावना को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है। उन्हें अपने कार्यों और सोच में देश के हित को सर्वोपरि रखना चाहिए।

फरवरी में पेश होगा बंगाल सरकार का अंतरिम बजट

मुख्यमंत्री ममता के नए ऐलान पर रहेगी नज़र

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल विधानसभा का बजट सेशन विधानसभा चुनाव से पहले फरवरी के पहले हफ्ते में शुरू होने वाला है। विधानसभा सचिवालय के मुताबिक, 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले यह मौजूदा सरकार का आखिरी सेशन होगा और इसी सेशन में अंतरिम बजट पेश किया जाएगा। राज्य सरकार की तरफ से वित्त राज्य मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य बजट पेश करेंगी। हालांकि, तृणमूल के एक सूत्र का कहना है कि मुख्यमंत्री ने 2021 के विधानसभा चुनाव से पहले अंतरिम बजट पेश किया था। पश्चिम बंगाल विधानसभा सचिवालय मान रहा है कि इस बार भी ऐसा ही होने की संभावना है। नतीजतन, राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों हलकों में इस सेशन को लेकर उत्सुकता और अटकलें बढ़ रही हैं। हालांकि, अंतरिम बजट होने के कारण अभी तक कोई बड़े संरचनात्मक बदलाव की घोषणा नहीं की गई है, लेकिन ऐसे संकेत मिले हैं कि राज्य सरकार कई लोक कल्याण परियोजनाओं के लिए आवंटन बढ़ाएगी।मालूम हो कि यह सेशन सत्रहवीं विधानसभा का आखिरी सेशन होगा। नियमित संसदीय प्रक्रिया के मुताबिक, सवाल-जवाब का सेशन, संदर्भ सत्र और अलग-अलग सरकारी और निजी प्रस्ताव पर चर्चा होगी। इसके साथ ही, कई ज़रूरी बिल पास होने की भी संभावना है। इस सेशन में सरकार के अंदर चर्चा, प्रशासनिक संरचना और लोक कल्याण परियोजना से जुड़े कुछ संशोधन और नए प्रपोज़ल को कानूनी मान्यता मिल सकती है। नवान्न सूत्रों के मुताबिक, हेल्थ, एजुकेशन, ग्रामीण विकास, सोशल सुरक्षा और रोजगार इन पांच एरिया को खास अहमियत दी जा सकती है। प्रशासन के एक हिस्से का मानना है कि लक्ष्मी भंडार, स्वास्थ्य साथी, कन्याश्री और खाद्यसाथी प्रोजेक्ट के लिए आवंटन बढ़ाने की संभावना है। राजनीतिक विश्लेषक के मुताबिक, यह बजट वास्तव में चुनाव से पहले सरकार के रिपोर्ट कार्ड का काम करेगा। दूसरी तरफ, इस सेशन में विपक्षी पार्टी का रोल भी ध्यान खींचेगा। राजनीतिक गलियारों में इस बात पर काफी चर्चा हो रही है कि विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में बीजेपी संसदीय पार्टी किस तरह की रणनीति अपनाएगी। माना जा रहा है कि बीजेपी हाल के कई मुद्दों - भर्ती में भ्रष्टाचार, कानून-व्यवस्था की स्थिति, केंद्र की कमी के आरोप और राज्य की वित्तीय हालत पर सरकार पर कड़ा हमला कर सकती है। वहीं, पार्टी सूत्रों के मुताबिक, सत्ताधारी पार्टी तृणमूल भी अपने विकास के कामों को पेश करके विपक्ष का सामना करने के लिए तैयार है। कुल मिलाकर, आने वाला बजट सेशन सिर्फ वित्तीय दस्तावेज़ पेश करने तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि राजनीतिक जानकारों के एक वर्ग का मानना है कि यह विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक ताकत दिखाने का एक अहम प्लेटफॉर्म बनने जा रहा है। पिछले पांच सालों में तृणमूल और बीजेपी के विधायक कई बार विधानसभा के अंदर भिड़ चुके हैं। इसलिए, राजनीतिक हलकों के एक वर्ग का मानना है कि आखिरी सेशन में बंगाल की राजनीति की गर्मी बढ़ सकती है।

वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर भारतीय सेना पूरे देश में आयोजित करेगी खास कार्यक्रम

19 से 26 जनवरी तक कई बड़े शहरों में मिलिट्री बैंड की परफॉर्मेंस देगी

निज संवाददाता : राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर भारतीय सेना पूरे देश में खास कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इसके दूसरे चरण के तहत सेना 19 से 26 जनवरी 2026 तक कई बड़े शहरों में मिलिट्री बैंड की परफॉर्मेंस देगी। इन कार्यक्रमों का मकसद वंदे मातरम् के ऐतिहासिक महत्व को सम्मान देना और लोगों में देशभक्ति और एकता की भावना को मजबूत करना है। बिहार के पटना और गया, झारखंड के रांची, उत्तर प्रदेश के लखनऊ और प्रयागराज, उत्तराखंड के देहरादून, छत्तीसगढ़ के रायपुर, ओडिशा के गोपालपुर, कर्नाटक के बेंगलुरु, मध्य प्रदेश के जबलपुर, महाराष्ट्र के मुंबई और पुणे, तेलंगाना के हैदराबाद, हिमाचल प्रदेश के शिमला, लद्दाख के कारगिल, राजस्थान के जयपुर और दिल्ली के इंडिया गेट पर ये कार्यक्रम होंगे। खास बात यह है कि पश्चिम बंगाल के नैहाटी, जो वंदे मातरम् के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की जन्मस्थली है, वहां भी सेना का बैंड कार्यक्रम होगा। इसके अलावा 18 जनवरी 2026 को इंडिया गेट पर आर्मी सिम्फनी बैंड की एक विशेष प्रस्तुति भी होगी। जानकारी के मुताबिक, हर कार्यक्रम करीब 45 मिनट का होगा और इसे दोपहर 2 से 5 बजे के बीच आयोजित किया जाएगा। आर्मी सिम्फनी बैंड का एक खास परफॉर्मेंस 18 जनवरी को इंडिया गेट पर तय किया गया है। हर परफॉर्मेंस करीब 45 मिनट का होगा, जो दोपहर 2 से 5 बजे के बीच होगा।

सुप्रीम कोर्ट के सामने है 92 हजार से ज्यादा लंबित मुकदमों से निपटने की चुनौती

निज संवाददाता : देश की सर्वोच्च अदालत में लंबित मुकदमों की फेरहिस्त लगातार बढ़ती जा रही है। गतवर्ष के अंत तक कुल लंबित मामलों का आंकड़ा 92251 पहुंच गया। माना जा रहा है कि साल 2026 में यह लाख तक पहुंच जाएगा। गतवर्ष सितंबर माह तक यह आंकड़ा 88417 था, जिसमें 69,553 दीवानी और 18,864 आपराधिक मामले हैं।राष्ट्रीय डेटा ग्रिड के अनुसार 31 दिसंबर को 92 हजार से पार पहुंचा मौजूदा आंकड़ा अब तक का सर्वाधिक है और मामलों की बढ़ती संख्या को दर्शाता है। सन् 2014 में यह संख्या 63,000 और 2023 के अंत तक लगभग 80,000 थी, जो लगातार वृद्धि दिखाती है। चुनौती यह है कि न्यायाधीशों की संख्या बढ़ने के बावजूद लंबित मामलों का अंबार कम नहीं हो रहा है। नए मामलों के आने की दर निपटारे की दर से अधिक है, जिससे लंबित मामलों की तादाद बढ़ती जा रही है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने साल 2025 में 75,000 से भी ज्यादा केस का निपटारा किया है। एक तरफ भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने 75 हजार से ज्यादा मामले निपटाए हैं। वहीं अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में हर साल जो हजारों केस दर्ज होते हैं, उनमें से बहस के लिए उसके पास मुश्किल से 70 से 80 मामले ही पहुंच पाते हैं। ब्रिटेन का उदाहरण ले लें। पिछले साल 29 दिसंबर तक यूके सुप्रीम कोर्ट के सामने 200 से कुछ ज्यादा केस आए और इसने लगभग 50 केस में ही फैसला सुनाया। इसके ठीक उलट भारत के सुप्रीम कोर्ट ने 1,400 बड़े फैसले सुनाए और हजारों आदेश देकर मामलों का निपटारा किया। सीजेआई सूर्यकांत ने हाल ही में देश में मुकदमों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर मध्यस्थता को बढ़ावा देने पर जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि जिला अदालतों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक सभी स्तरों पर बड़ी संख्या में मध्यस्थों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मध्यस्थता, जो न्यायिक मामलों के लंबित होने को कम कर सकती है, कानून की कमजोरी का संकेत नहीं है, बल्कि इसका उच्चतम विकास है।इसे लेकर सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने भी कहा कि देश में मुकदमों की बढ़ती संख्या को देखते हुए नए और व्यवहारिक समाधान की ओर देखने की जरूरत है। इसके लिए मध्यस्थता सही तरीका हो सकता है। उनके अनुसार इससे पक्षकारों को आपसी सहमति पर आने का मौका मिलता है, ना कि परंपरागत तरीके से अदालती लड़ाई लड़ते रहने का। देश के कई कानूनविद् तुषार मेहता की तरह मध्यस्थता के समर्थन में विचार रखते हैं, ताकि हमारी न्यायपालिका पर बोझ कम हो सके।भारतीय न्यायपालिका की बात करें तो यहां आबादी के अनुमात में जजों की संख्या दुनिया में सबसे कम यानी प्रत्येक 10 लाख की जनसंख्या पर सिर्फ 21 है। वहीं अमेरिका में इतनी ही आबादी पर 150 जज काम कर रहे हैं। विधि आयोग की 1987 में प्रकाशित रिपोर्ट में भी प्रत्येक 10 लाख की जनसंख्या पर 50 जजों की सिफारिश की गई थी, और यह भी अमेरिका के मुकाबले मात्र एक-तिहाई ही है। यह स्थिति सुप्रीम कोर्ट में भी है और फिर भी जितने केस का समाधान एक साल में हुआ है, वह अमेरिका और ब्रिटिश न्यायपालिका के लिए सोच पाना भी नाममुकिन है।

नए साल में आरएसएस कर रहा है सांगठनिक ढांचे में बदलाव पर विचार

मार्च में संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में होगा अंतिम फैसला

निज संवाददाता : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपने सांगठनिक ढांचे में बदलाव पर विचार कर रहा है। सूत्रों के मुताबिक, संघ में इस तरह के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। मार्च 2026 में होने वाली संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में बदलाव के प्रस्ताव पर बात होगी। प्रतिनिधि सभा में ही अंतिम फैसला लिया जाएगा। यह सभा हरियाणा के समालखा में होगी। संघ के सांगठनिक ढांचे में तीन तरह के बदलाव का प्रस्ताव है।

अभी संघ ने पूरे देश को काम के लिहाज से 11 क्षेत्रों में बांटा है, लेकिन इसे 9 करने का प्रस्ताव है। अभी संघ के प्रांत प्रचारक राज्य की सरकारी परिभाषा के हिसाब से बने प्रांत के आधार पर नहीं होते हैं, ये भी संघ के कामकाज की सुविधा के हिसाब से बनाए गए हैं। अब प्रांत प्रचारकों की जगह राज्य प्रचारक बनाने का प्रस्ताव है। ये राज्य की इकाई के हिसाब से ही होंगे। जैसे अभी संघ के हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड जैसे राज्यों में एक ही प्रांत प्रचारक है, जो एक तरह से पूरे राज्य के ही प्रचारक है। जो बड़े राज्य हैं, उनमें कई प्रांत प्रचारक है। जैसे राजस्थान में 3 और यूपी में 6 प्रांत प्रचारक हैं। बदलाव के बाद सभी राज्यों में राज्य प्रचारक होंगे। अभी बड़े राज्यों में कामकाज के हिसाब से ज्यादा प्रांत प्रचारक बनाए गए हैं।

राज्य प्रचारक के साथ संभाग प्रचारक का पद भी बनाया जाएगा। ये एक संभाग यानी कमिश्नरी के प्रचारक होंगे। ये विभाग प्रचारक और राज्य प्रचारक के बीच की इकाई होंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े सूत्रों ने बताया कि संघ के काम का विस्तार हो रहा है। उसी हिसाब से संगठन का ढांचा बनाने का प्रस्ताव है। इससे काम का विकेंद्रीकरण किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि संघ ने समाज जागरण सहित पंच परिवर्तन का जो काम तय किया है, उसे ठीक से संचालित करने के लिए संगठन के ढांचे में बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही है। अक्टूबर 2026 तक संघ के शताब्दी वर्ष के ही कई कार्यक्रम है, इसलिए अगर बदलाव के प्रस्ताव को मंजूरी मिलती है, तब भी ये साल 2027 तक ही लागू हो पाएगा।

गंगासागर के तीर्थयात्रियों की सेवा हेतु आउटराम घाट पर निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा शिविर संचालित

निज संवाददाता : सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा गंगासागर जाने वाले श्रद्धालुओं की सेवा एवं सहायता के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आउटराम घाट पर दो स्थानों पर निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा शिविर संचालित किए गए।प्रथम शिविर कैम्प संख्या 12 श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के सहयोग से तथा द्वितीय शिविर कैम्प संख्या 52 राष्ट्रीय मानव सेवा ट्रस्ट के शिविर परिसर में लगाया गया।ये सेवा शिविर 9 जनवरी से निरंतर कुशल एवं अनुभवी चिकित्सा कर्मियों के सहयोग से संचालित हो रहे थे, जिनके माध्यम से हजारों तीर्थयात्रियों को प्राथमिक उपचार, आवश्यक दवाइयां एवं चिकित्सकीय परामर्श निःशुल्क उपलब्ध कराया गया।इन शिविरों का संचालन संस्था के चेयरमैन बिमल दीवान एवं अध्यक्ष पवन बंसल के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में अत्यंत सुव्यवस्थित रूप से किया गया। सचिव आदित्य विक्रम तुलस्यान के साथ मनोज चौधरी, सुभाष चंद्र गोयनका, मनीष धानुका, महेश काबरा, दूर्शी चंद अग्रवाल, मोहित सुरेका, सुमित झुनझुनवाला, गोपाल अग्रवाल, चेतन अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल सहित अनेक समर्पित कार्यकर्ताओं ने सेवा भाव से अपनी जिम्मेदारियां निभाईं।बंसल ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शिविरों में आवश्यक दवाइयों, प्राथमिक उपचार सामग्री एवं चिकित्सकीय संसाधनों की समुचित व्यवस्था की गई थी। सोसायटी बेनिफिट सर्कल का यह सेवा प्रयास सामाजिक उत्तरदायित्व एवं मानव सेवा की भावना का प्रेरणादायी एवं सशक्त उदाहरण है।

भारतीय नौसेना हल्दिया में बना रही है नया नौसैनिक अड्डा

चीन-पाकिस्तान-बांग्लादेश पर रहेगी नजर

निज संवाददाता : भारतीय नौसेना पश्चिम बंगाल के हल्दिया में एक नया नौसैनिक अड्डा तैयार कर रही है। सूत्रों ने बताया कि यह सुविधा हल्दिया पोर्ट अथॉरिटी के सहयोग से तैयार की जा रही है। इस नौसैनिक अड्डे पर फास्ट इंटरसेप्टर क्राफ्ट (एफआईसी) और फास्ट अटैक क्राफ्ट (एफएसी) जैसे छोटे व तेज जहाजों की तैनाती की जा रही है। यह जहाज तटीय सुरक्षा और घुसपैठ रोधी अभियानों के लिए आदर्श माने जाते हैं।

सूत्रों ने बताया कि हल्दिया में नौसैनिक सुविधा का प्रस्ताव काफी पुराना था, अब इसको आधिकारिक तौर पर मंजूरी मिल गई है। शुरुआती चरण में हल्दिया में एक विशेष जेटी बनाई जा रही है, ताकि छोटे जहाजों को आसानी से डॉक किया जा सके। हल्दिया एक व्यस्त व्यापारिक बंदरगाह है। नौसैनिक युद्धपोतों की आवाजाही को वाणिज्यिक जहाजों के साथ सुचारू रूप से चलाने के लिए हल्दिया पोर्ट अथॉरिटी के तालमेल से कार्य किया जा रहा है। चेन्नई, तूतीकोरिन और मंगलोर में भी नौसेना नागरिक बंदरगाहों के साथ समन्वय में ही कार्य करती है। हाल ही में बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच रक्षा संबंध काफी गहरे हुए हैं। साथ ही चीन की मौजूदगी ने भी भारत की चिंता बढ़ाई है। ऐसे में इस परिचालन सुविधा से नौसेना इस त्रिकोण की गतिविधियों पर करीबी से नजर रख सकेगी। हल्दिया में नौसेना की मौजूदगी से पूर्वी समुद्र तट पर भारत की ऑपरेशनल पहुंच और बंगाल की खाड़ी में भारत का दबदबा बढ़ेगा। हल्दिया में नौसैनिक केंद्र से नौसेना के जहाजों को कोलकाता से हुगली नदी की लंबी यात्रा नहीं करनी पड़ेगी, जिससे आपात स्थिति में वे तेजी से समुद्र में पहुंच सकेंगे। नौसेना के प्रथम प्रशिक्षण स्क्वॉड्रन के चार युद्धपोत जल्द ही दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा पर रवाना हो रहे हैं। इनमें आईएनएस तीर, आईएनएस शार्दूल, आईएनएस सुजाता और आईसीजीएस सारथी शामिल हैं। यह युद्धपोत सिंगापुर, इंडोनेशिया और थाईलैंड पहुंचेंगे। इस यात्रा से दक्षिण पूर्व एशिया में भारत का दबदबा बढ़ेगा। नौसेना ने बताया कि यह अभियान उसके 110 वें एकीकृत अधिकारी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (आईओटीसी) का हिस्सा है। इस यात्रा का उद्देश्य अधिकारी प्रशिक्षुओं को व्यापक अनुभव और सांस्कृतिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। इस दौरान मेजबान देशों की नौसेनाओं के साथ अनेक पेशेवर व प्रशिक्षण गतिविधियां आयोजित होंगी। 110वें एकीकृत अधिकारी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में छह अंतरराष्ट्रीय अधिकारी प्रशिक्षु भी शामिल हैं। साथ ही वायुसेना और सेना के जवान भी शामिल हैं। यह मुहिम दिखाती है कि भारत मित्र देशों के लिए पेशेवर प्रशिक्षण का बड़ा केंद्र बनकर उभर रहा है। दक्षिण-पूर्व एशिया में नौसेना की सक्रियता इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभुत्व को देखते हुए सामरिक संतुलन के लिहाज से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। यह अभियान भारत की एक्ट ईस्ट नीति के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ समुद्री सहयोग मजबूत करना है। साथ ही स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद महासागर क्षेत्र की धारणा के अनुरूप भी है।

चिकन नेक की तरफ देखने से ही छिन्न-भिन्न कर देगा 'सुदर्शन चक्र'

सिलीगुड़ी बॉर्डर पर लगी अत्याधुनिक बाड़

निज संवाददाता : भारतीय सेना ने चिकन नेक यानी सिलीगुड़ी कॉरिडोर के चारों ओर ज़्यादा अत्याधुनिक सुरक्षा घेरा बना लिया है। भारत और बांग्लादेश बॉर्डर एरिया को पूरी तरह से नए डिज़ाइन की बाड़ से घेर दिया गया है। पता चला है कि यह नई बाड़ बॉर्डर एरिया के 75 फीसद हिस्से में लगाई गई है। इतना ही नहीं, यह अत्याधुनिक बाड़ पावरफुल सर्विलांस कैमरों (शक्तिशाली निगरानी कैमरे) और एडवांस्ड एरिया डॉमिनेशन सिस्टम (उन्नत क्षेत्र प्रभुत्व प्रणाली) से जुड़ी हुई है। नतीजतन, अब अगर बॉर्डर से कोई निकलता भी है, तो वह बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स यानी बीएसएफ की नज़र में रहेगा। इसके साथ ही, सेल्फ डिफेंस के लिए सुदर्शन चक्र एस-400 डिफेंस सिस्टम को भी शील्ड किया गया है। खबर है कि रूस से खरीदी गई इस सरफेस-टू-एयर मिसाइलों को भी बॉर्डर पर तैयार रखा गया है। सुदर्शन चक्र भारत की एस-400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली का उपनाम है, जो रूस द्वारा विकसित एक शक्तिशाली, लंबी दूरी की सतह-से-हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली है इंटेलिजेंस सूत्रों के मुताबिक, बांग्लादेश में अंदरूनी अशांति के कारण भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर ज़्यादा से ज़्यादा एहतियाती कदम उठाए गए हैं। खास तौर पर सिलीगुड़ी कॉरिडोर इलाके के सिक्योरिटी सिस्टम में मॉडर्नाइजेशन (आधुनिकीकरण) का काम लगभग पूरा होने वाला है। बॉर्डर एरिया के करीब 75 फीसद हिस्से में नए डिजाइन की फेंस लगाई गई है। करीब 12 फीट ऊंची इस मॉडर्न फेंस को पावरफुल सर्विलांस कैमरों (शक्तिशाली निगरानी कैमरे) और एडवांस्ड एरिया डॉमिनेशन सिस्टम से लैस किया गया है। ताकि बॉर्डर पर हर मूवमेंट पर रियल-टाइम में नजर रखी जा सके। फेंस एंटी-कटर और एंटी-क्लाइंब है। पूरा सिस्टम बीएसएफ के जिम्मे है। गौरतलब है कि बांग्लादेश की देश के पांच राज्यों के साथ 4,096 किलोमीटर की इंटरनेशनल बॉर्डर है। इसमें से पश्चिम बंगाल की करीब 2,217 किलोमीटर है। यहां नए डिजाइन की फेंस लगाई गई है। इस तरह का मॉडर्नाइजेशन (आधुनिकीकरण) घुसपैठ, स्मगलिंग और बॉर्डर पर अस्थिरता के असर को रोकने के लिए है। साथ ही, सुरक्षा खतरे को ध्यान में रखते हुए भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर 360 डिग्री सिक्योरिटी के लिए 8,160 करोड़ टका की अतिरिक्त लागत से दो और आकाश एडवांस्ड मिसाइल सिस्टम और भैरब बटालियन तैनात किए गए हैं। यहां तक कि एस-400 डिफेंस सिस्टम को भी सेल्फ-डिफेंस के लिए शील्ड कर दिया गया है। खबर है कि रूस से खरीदी गई सरफेस-टू-एयर मिसाइलों को भी चिकन नेक की सुरक्षा के लिए तैयार रखा गया है।

महिलाओं के लिए सबसे सुरक्षित शहर की टॉप 10 में कोलकाता

यूपी और बिहार के एक भी नहीं

निज संवाददाता : महिलाओं के लिए कौन सा शहर सबसे सुरक्षित और बेहतर है? इस सवाल का जवाब अवतार ग्रुप की ताजा रिपोर्ट टॉप सिटीज फॉर वीमेन इन इंडिया (टीसीडब्ल्यूआई) के चौथे संस्करण में मिल गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, महिलाओं की भागीदारी, सुरक्षा और करियर ग्रोथ के मामले में बेंगलुरु (53.29 स्कोर) देश में पहले स्थान पर है, जबकि चेन्नई ने दूसरा स्थान हासिल किया है। यह रिपोर्ट शहरों को सिटी इन्क्लूजन स्कोर (सीआईएस) के आधार पर रैंक करती है। यह स्कोर दो मुख्य पैमानों को मिलाकर बनाया गया है।

सोशल इन्क्लूजन स्कोर (एसआईएस) : इसमें शहर की सुरक्षा, महिलाओं के रहने की सुगमता और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं को देखा जाता है।

इंडस्ट्रियल इन्क्लूजन स्कोर (आईआईएस): इसमें महिलाओं के लिए नौकरियों के अवसर और कंपनियों द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का आकलन होता है।

रिपोर्ट के मुख्य आकर्षण

बेंगलुरु और चेन्नई का दबदबा: करियर ग्रोथ और इंडस्ट्री सपोर्ट के मामले में बेंगलुरु टॉप पर है। वहीं, चेन्नई सुरक्षा, पब्लिक ट्रांसपोर्ट और शिक्षा जैसे सामाजिक कारकों में सबसे आगे रहा।

दिल्ली-एनसीआर का हाल : दिल्ली, गुरुग्राम और नोएडा में महिलाओं के लिए नौकरियों की भरमार है, लेकिन सुरक्षा, बजट और मोबिलिटी के मामले में ये शहर फिसड्डी साबित हुए हैं। हालांकि, गुरुग्राम की रैंकिंग में पिछला साल के मुकाबले सुधार देखा गया है।

मुंबई और पुणे की चुनौती: मुंबई में करियर के शानदार मौके हैं, लेकिन यहां रहने का भारी खर्च और इंफ्रास्ट्रक्चर महिलाओं के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

छोटे शहरों की बढ़ती धमक : 2025 की रैंकिंग में टियर-2 शहरों की भागीदारी बढ़ी है। शिमला और तिरुवनंतपुरम जैसे शहर सामाजिक रूप से महिलाओं के लिए बहुत अच्छे हैं, लेकिन यहां बड़े स्तर पर रोजगार की कमी है।

क्षेत्रवार प्रदर्शन: दक्षिण भारत सबसे आगे क्षेत्रीय आधार पर देखा जाए तो दक्षिण भारत सबसे समावेशी क्षेत्र रहा है। इसके बाद पश्चिमी भारत का स्थान आता है। रिपोर्ट के अनुसार, मध्य और पूर्वी भारत (बिहार, यूपी और ओडिशा के क्षेत्र) महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा और औद्योगिक भागीदारी, दोनों ही मोर्चों पर सबसे पीछे रहे हैं।

2025 में महिलाओं के लिए सबसे सुरक्षित 10 शहर

1.बेंगलुरु, 2.चेन्नई, 3.पुणे, 4.हैदराबाद, 5.मुंबई, 6.गुरुग्राम, 7.कोलकाता, 8.अहमदाबाद, 9.त्रिवेंद्रम, 10.कोयंबटूर

यह रिपोर्ट साफ करती है कि महिला-अनुकूल शहर अब सिर्फ मेट्रो शहरों तक सीमित नहीं हैं, लेकिन उत्तर और पूर्वी भारत के शहरों को महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल तैयार करने पर अभी काफी काम करने की जरूरत है।

बंगाल में शुरू हो गई नए डीजीपी के नाम की चर्चा

31 जनवरी को रिटायर हो रहे हैं राजीव कुमार

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनावों के ऐलान से पहले प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की आई-पैक ऑफिस पर रेड को लेकर कोलकाता से दिल्ली तक राजनीतिक गरमाई हुई है। इस बीच, राज्य का नया पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) कौन होगा? इसको लेकर चर्चा शुरू हो गई है, क्योंकि मौजूदा डीजीपी राजीव कुमार का कार्यकाल 31 जनवरी को पूरा हो रहा है। 1989 बैच के आईपीएस ऑफिसर राजीव कुमार जुलाई, 2024 में पश्चिम बंगाल के डीजीपी बने थे। इससे पहले लोकसभा चुनावों में उन्हें केंद्रीय चुनाव आयोग के आदेश पर हटाया गया था। वह पहली बार इस कुर्सी पर दिसंबर, 2023 में बैठे थे।उत्तर प्रदेश के चंदौसी जिले से ताल्लक रखने वाले राजीव कुमार पूर्व में कोलकाता पुलिस आयुक्त भी रह चुके हैं। वे पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विश्वासपात्र अधिकारियों के में गिने जाते हैं। आईआईटी रुड़की से कंप्यूटर साइंस में बीटेक करने वाले राजीव कुमार विधाननगर के आयुक्त के साथ एसटीएफ के चीफ भी रह चुके हैं। ऐसे में जब राजीव कुमार अब अपना कार्यकाल 31 जनवरी को पूरा कर रहे हैं तब उनके उत्तराधिकारी की चर्चा शुरू हो गई है। चर्चा है कि ममता बनर्जी किसी नए आईपीएस को डीजीपी बना सकती है। राजीव कुमार 1988 बैच के आईपीएस मनोज मालवीय के रिटायर होने के बाद डीजीपी बने थे।पश्चिम बंगाल के डीजीपी की दौड़ में तीन आईपीएस अधिकारी हैं। इनमें पहला नाम अनुज शर्मा का है। दूसरा नाम एन आर बाबू और तीसरा नाम आईपीएस सिद्ध नाथ गुप्ता का है। इसके अलावा पीयूष पांडेय भी डीजीपी बनने की दौड़ में हैं।

रात भर जहरीले सांप के साथ सोता रहा युवक, नहीं मिली भनक

बहुत ही खतरनाक मंजर

निज संवाददाता : पश्चिम मेदिनीपुर जिले में मौत को नजदीक से छूकर निकल जाने का एक हैरान कर देने वाला खतरनाक मंजर घटित हुआ है। इससे साबित हुआ है कि ''जाको राखे साइयां मार सके ना कोय''। यहां कड़ाके की ठंड में एक युवक को उस समय जिंदगी और मौत के बीच की सबसे डरावनी रात गुजारनी पड़ी, जब वह अनजाने में एक जहरीले सांप के साथ पूरी रात सोता रहा। यह घटना चंद्रकोना ब्लॉक नंबर-1 के सीतारशोल गांव की है। सीतारशोल गांव निवासी श्यामसुंदर सांतरा रोज की तरह दिनभर मेहनत के बाद रात में अपने कमरे में मच्छरदानी लगाकर सो गए थे। सर्दी से बचने के लिए बिस्तर पर कंबल और कालीन बिछा हुआ था। इसी दौरान ठंड से बचने की तलाश में एक जहरीला चंद्रबोड़ा सांप, जिसे हिंदी में फुरसा और अंग्रेजी में रसेल्स वाइपर कहा जाता है, मच्छरदानी के कोने से अंदर घुस आया। सांप कालीन की तहों में छिप गया और श्यामसुंदर के शरीर के बिल्कुल पास पूरी रात पड़ा रहा।

श्यामसुंदर गहरी नींद में थे और उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मौत उनके इतने करीब है। पूरी रात सांप उनके पास ही कुंडली मारे रहा, लेकिन किसी तरह उसने हमला नहीं किया। सुबह तड़के जब श्यामसुंदर की नींद खुली तो उन्होंने बिस्तर के पास फुफकारने की आवाज सुनी। जैसे ही उन्होंने सिर उठाया, देखा कि तकिए के पास एक बड़ा जहरीला सांप कुंडली मारे बैठा है। यह दृश्य देखकर उनके पैरों तले जमीन खिसक गई।

घबराए श्यामसुंदर ने बिना वक्त गंवाए बिस्तर से छलांग लगा दी। ठंड के बावजूद उनके माथे पर पसीना आ गया। उन्होंने तुरंत गांव वालों को आवाज दी और वन विभाग को सूचना दी गई। कुछ देर बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। गांव वाले और वनकर्मी यह देखकर हैरान रह गए कि इतना खतरनाक सांप पूरी रात मच्छरदानी के अंदर ही मौजूद रहा और किसी को नुकसान नहीं पहुंचा। वन विभाग की टीम ने सावधानीपूर्वक सांप को पकड़ा और उसे सुरक्षित जंगल में छोड़ दिया। श्यामसुंदर सांतरा इस घटना में बाल-बाल बच गए। गांव में इस घटना के बाद दहशत का माहौल फैल गया। चंद्रबोड़ा या रसेल्स वाइपर भारत के चार सबसे जहरीले सांपों में शामिल है। इसका जहर खून को जमने से रोक देता है और आंतरिक रक्तस्राव, किडनी फेल्योर और मौत तक का कारण बन सकता है। इसके काटने के बाद समय पर इलाज न मिले तो जान बचना बेहद मुश्किल हो जाता है। यही वजह है कि श्यामसुंदर का बच जाना किसी चमत्कार से कम नहीं माना जा रहा है।

'उन्नयनेर पांचाली' के जरिए तृणमूल रख रही 15 साल के विकास की गाथा

विधानसभा चुनाव से पहले नवान्न ने शुरू किया व्यापक प्रचार अभियान

निज संवाददाता : उन्नयनेर पांचाली के जरिए सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस अपने 15 साल के शासन की विकास-गाथा लोगों के सामने रख रही है। यानी 2026 के बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले नवान्न ने व्यापक प्रचार अभियान शुरू कर दिया है। इसी के साथ नवान्न ने लोगों के सामने अन्य दो सेवाओं के मुद्दों को रेखांकित करने के लिए तीन कार्यक्रम को टाइम-बाउंड तरीके से लागू करने पर फोकस किया है। इनमें सिर पर छत व घर के सामने पक्की सड़क प्रमुख हैं। इसमें सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस की संगठन और एडवाइज़री बॉडी एआईपैक की सक्रिय भूमिका भी शामिल है। नवान्न की तरफ से जिला प्रशासन को भी मैसेज भेजा गया है ताकि फरवरी महीने तक लोग इन मुद्दों को देख सकें। तृणमूल के शीर्ष नेतृत्व का मानना है कि सड़कें, पीने का पानी और बिजली आम आदमी की बुनियादी ज़रूरतें हैं। बाकी सब उसके बाद आता है। इसी आधार पर, सभी जिला प्रशासन चुनाव से पहले सिर पर पक्की छत और दरवाज़े पर सड़कें बनाने को रेखांकित करने के लिए मैदान में उतर आए हैं। सत्ताधारी पार्टी के एक बड़े नेता के शब्दों में-इसी तरह पिछले लोकसभा चुनाव में बीजेपी के ध्रुवीकरण को कम किया गया था। हालांकि, अलग-अलग तबकों में सवाल उठ रहे हैं कि क्या इस बार भी यह प्रचार अभियान काम करेगा। क्योंकि, लोकसभा चुनाव के बाद माहौल बदल गया है। बांग्लादेश के हालात भी पश्चिम बंगाल की राजनीति में हलचल मचा रहे हैं। राज्य में आरजी कर कांड के दौर में गुस्से का बड़ा विस्फोट हुआ था। हालांकि, इसके बावजूद तृणमूल कांग्रेस पुराने रास्ते पर ही आगामी विधानसभा चुनाव की ओर बढ़ना चाहती है। पिछले दौर में राज्य सरकार ने बांग्ला बाड़ी प्रोजेक्ट के तहत 12 लाख परिवारों को पैसे दिए थे। विधानसभा चुनाव से पहले 16 लाख और परिवारों को 60,000 रुपये के घर की पहली किस्त मिलेगी। राज्य के पंचायत मंत्री प्रदीप मजूमदार ने कहा-तारीख अभी तय नहीं हुई है। हालांकि, घर की पहली किस्त जनवरी में सीधे लाभार्थियों के बैंक अकाउंट में पहुंच जाएगी। यानी, 28 लाख परिवारों को दो चरणों में पक्के घर बनाने के लिए पैसे मिल रहे हैं। 12 लाख परिवारों को दोनों किस्तें मिल चुकी हैं। 16 लाख परिवारों को चुनाव से पहले 60 हजार रुपये की पहली किस्त मिलने वाली है।

सत्ताधारी पार्टी को उम्मीद है कि आर्थिक रूप से पिछड़े 28 लाख परिवारों को, जिन्हें छत मिल रही है या मिल चुकी है, इसका असर बैलेट बॉक्स में दिखेगा। अगर हर परिवार में औसतन चार लोग हैं, तो कुल लाभार्थियों की संख्या 1.25 करोड़ होगी। हालांकि, संख्या को लेकर एक अलग तर्क है। पंचायत विभाग के एक अधिकारी के मुताबिक, हर परिवार में सभी वोटर नहीं होंगे। इस वजह से, यह संख्या 1 करोड़ से कम होगी। नवान्न एक डबल प्रोग्राम भी चला रहा है ताकि आम लोग अपने घरों के साथ-साथ अपने दरवाज़े पर भी चमचमाती सड़कें देख सकें। राज्य सरकार ने आमादेर पाड़ा, आमादेर समाधान' (हमारा मोहल्ला, हमारा समाधान) प्रोजेक्ट के लिए हर बूथ पर 10 लाख रुपये दिए हैं। प्रोजेक्ट में सड़कों, सोलर लाइटों और छोटे पुलों को बनाने और उनकी मरम्मत का काम पहले ही शुरू हो चुका है। इसके अलावा, बड़ी सड़कों को बनाने और उनकी मरम्मत के लिए पथश्री-4 शुरू किया गया है। इस प्रोजेक्ट के तहत, पूरे राज्य में कुल 20 हज़ार किलोमीटर सड़कों को बनाने और उनकी मरम्मत का काम शुरू हो चुका है। जिस तरह प्रशासन इन तीनों कार्यक्रम में सक्रिय है, उसी तरह तृणमूल ने स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधि को भी सतर्क और सक्रिय रहने का मैसेज दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि पंचायत और म्युनिसिपैलिटी स्तर पर सोलह में से चौदह लोगों के प्रतिनिधि तृणमूल के हैं। सरकारी प्रोग्राम को लागू करने में नवान्न की यही उम्मीद है। ध्यान देने वाली बात यह है कि पिछले चार-पांच सालों से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी समेत पूरी तृणमूल कह रही है कि केंद्र के प्रोजेक्ट के लिए राज्य का अलॉटमेंट रोक दिया गया है, जिनमें से एक आवास योजना और ग्राम सड़क योजना भी है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पिछले डेढ़ दशक में अपनी सरकार द्वारा किए गए कामों के हिसाब के तौर पर उन्नयनेर पांचाली (विकास की गाथा) पहले ही पब्लिश कर चुकी हैं। पांचाली गाना इमोन चक्रवर्ती ने गाया है। उस पांचाली कैंपेन में तृणमूल की महिला सेना घूम-घूमकर डिब्बा बजा रही है। महिलाओं को एक जगह गोल घेरे में बिठाकर चटाई दी जा रही है और पांचाली सुनाई जा रही है। जहां लक्ष्मी भंडार को सबसे ज़्यादा अहमियत मिल रही है। एआईपैक टीम यह देख रही है कि कैंपेन ठीक चल रहा है या नहीं। कंसल्टिंग फर्म ने भी तृणमूल की तरह एक समानांतर फोर्स तैनात की है। वे ग्रामीण इलाकों में ग्राम पंचायत-आधारित कैंपेन की निगरानी कर रहे हैं।

18 जनवरी से विशेषज्ञ गोरुमारा और चपरामारी जंगलों में करेंगे बाघों की गिनती

निज संवाददाता : बंगाल का वन विभाग पहली बार 18 से 20 जनवरी तक गोरुमारा नेशनल पार्क और जलपाईगुड़ी जिले के चपरामारी वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी में एक साथ टाइगर सेंसस (बाघों की गिनती) करेगा। ठंड कम होने के बाद कलिम्पोंग जिले के नेओरा वैली नेशनल पार्क में टाइगर की गिनती की जाएगी। वरिष्ठ वन अधिकारियों ने बताया कि यह सेंसस नेशनल टाइगर कंज़र्वेशन अथॉरिटी (एनटीसीए) और वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडिया (डब्ल्यूआईआई) के साथ मिलकर किया जाएगा। गोरुमारा वाइल्डलाइफ डिवीजन के डिवीजनल फॉरेस्ट ऑफिसर द्विजप्रतिम सेन ने कहा कि डिवीजन हाल ही में ग्लोबल टाइगर फोरम का मेंबर बना है, यह स्टेटस सिर्फ़ उन फॉरेस्ट डिवीजन को दिया जाता है जिन्होंने टाइगर की मौजूदगी कन्फर्म की हो। द्विजप्रतिम सेन ने कहा कि डिवीज़न हाल ही में ग्लोबल टाइगर फोरम का मेंबर बना है, यह स्टेटस सिर्फ़ उन फॉरेस्ट डिवीज़न को दिया जाता है जिन्होंने टाइगर की मौजूदगी कन्फर्म की हो। सेन ने कहा- नेओरा वैली में टाइगर की मौजूदगी के सबूत, जिसमें फ़ोटो, पंजों के निशान और स्कैट सैंपल शामिल हैं। डब्ल्यूआईआई को पहले ही जमा कर दिए गए थे।

कई साइंटिफिक तरीकों का इस्तेमाल किया जाएगा

वन विभाग के कर्मचारी जलपाईगुड़ी के गोरुमारा नेशनल पार्क में होने वाली बाघ जनगणना के लिए एक ट्रेनिंग कैंप में हिस्सा लेते हुए

नेओरा वैली में अभी तापमान बहुत कम है। इसके अलावा, हिमालयन काले भालू की मौजूदगी की वजह से इस इलाके में काफ़ी खतरा है, जिससे फ़ील्डवर्क खतरनाक हो जाता है। इसलिए, नेओरा वैली में टाइगर सेंसस मौसम ठीक होने के बाद, शायद अगले महीने शुरू होगा। गोरुमारा, चंपरामारी और नेओरा वैली के जंगल गोरुमारा डिवीज़न के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। सेन ने कहा-हम गोरुमारा और चपरामारी में सेंसस के लिए लगभग 250 सर्वेयर लगाएंगे। नेओरा वैली में लगभग 200 सर्वेयर फ़ील्ड में होंगे। उन्होंने कहा कि सेंसस में कई साइंटिफिक तरीकों का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसमें कैमरा ट्रैपिंग, पॉलीगॉन मेथड का इस्तेमाल करके फुट पेट्रोल सर्वे, डायरेक्ट विज़ुअल ऑब्ज़र्वेशन, पेड़ों पर पंजों के निशान की पहचान, टाइगर स्कैट सैंपल इकट्ठा करना और पगमार्क का एनालिसिस शामिल है। जनगणना से पहले, गोरुमारा और चपरामारी में जंगल के कर्मचारियों की ट्रेनिंग गुरुवार को पूरी हो गई। बक्सा टाइगर रिज़र्व में बाघ देखे जाने का आखिरी ऑफिशियल ज़िक्र 2022 की ऑल-इंडिया टाइगर एस्टिमेशन रिपोर्ट में आया था, जिसमें एक बड़े बाघ की मौजूदगी की पुष्टि हुई थी। हालांकि, 2017 से सेल फ़ोन और कैमरा ट्रैप के ज़रिए नेओरा वैली में बाघों के कई फ़ोटोग्राफ़िक रिकॉर्ड होने और एनालिसिस के लिए डब्ल्यूआईआई को स्कैट सैंपल भेजने के बाद भी, 2022 की नेशनल टाइगर जनगणना रिपोर्ट में नेओरा वैली में जानवर की मौजूदगी दर्ज नहीं की गई। जनगणना के दौरान, सर्वे करने वाले बाघों के रहने की जगहों और शिकार की आबादी की स्थिति का पता लगाएंगे, जिसे इस इलाके में बाघों को बनाए रखने के लिए बहुत ज़रूरी माना जाता है। सर्वे में नेओरा वैली के अंदर बाघों के रहने की जगहों की पहचान करने और बाघों के आने-जाने के रास्तों, खासकर नेओरा वैली को भूटान और सिक्किम से जोड़ने वाले ट्राई-जंक्शन फ़ॉरेस्ट कॉरिडोर पर नज़र रखने पर भी ध्यान दिया जाएगा। सेन ने कहा-सर्दियों से पहले, नेओरा वैली के घने पहाड़ी जंगलों में 80 ट्रैप कैमरे लगाए गए थे। गोरुमारा और चपरामारी में 60 ट्रैप कैमरे लगाने का काम चल रहा है। उन्होंने आगे कहा-इसके अलावा, जलदापारा नेशनल पार्क से 45 और ट्रैप कैमरे लाए जाएंगे और जनवरी के आखिर तक नेओरा वैली में लगाए जाएंगे।'' जनगणना शुरू होने के बाद, कैमरा ट्रैप 45 दिनों तक लगातार चालू रहेंगे। एक फ़ॉरेस्टर ने कहा- कैप्चर की गई तस्वीरों का डब्ल्यूआईआई की रिसर्च लैब में एनालिसिस किया जाएगा, जहां एक्सपर्ट खास धारियों के पैटर्न के आधार पर बाघों की आबादी का अनुमान लगाएंगे।

बंगाल विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस नेताओं में एकता का अभाव

तीन विकल्पों की है चर्चा

निज संवाददाता : एक तरफ जहां बंगाल में इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए तृणमूल कांग्रेस और बीजेपी सत्ता की लड़ाई में कूद चुकी है, वहीं, दूसरी तरफ कांग्रेस अभी तक हाथ पर हाथ धरे बैठी हुई है। इस चुनाव में कांग्रेस कैसे उतरेगी पार्टी के भीतर अभी तक यही तय नहीं हो पाया है। फिलहाल उसके सामने तीन विकल्प मौजूद हैं, लेकिन तीनों को लेकर पार्टी के नेता एकमत नहीं हैं बल्कि बंटे हुए हैं। टीएमसी की और से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ-साथ उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी पूरी तरह से चुनावी मोड में आ गए हैं। अभी हाल में अभिषेक बनर्जी ने एक बड़ी रैली की। दूसरी ओर बीजेपी की ओर से केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मोर्चा संभाल लिया है। हाल ही में अमित शाह का बंगाल दौरा खत्म हुआ है। शाह ने कोलकाता में प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की थी और बंगाल सरकार को आड़े हाथों लिया था।

कांग्रेस के पास तीन विकल्प

1. तृणमूल के साथ गठबंधन

कांग्रेस के पास सबसे बड़ा विकल्प टीएमसी के साथ गठबंधन का है। 2024 लोकसभा चुनाव के वक्त टीएमसी ने कांग्रेस को सिर्फ दो सीटें ऑफर की थीं, जिससे आहत कांग्रेस ने लेफ्ट के साथ समझौता किया। हालांकि टीएमसी ने यह भी कहा कि, वह इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनी रहेगी। ऐसे ही विधानसभा चुनाव से पहले अभिषेक बनर्जी ने साफ किया है कि बंगाल में उसे बीजेपी से लड़ने के लिए कांग्रेस की जरूरत नहीं है, बाकी अंतिम फैसला ममता करेंगी। हालांकि हम इंडिया ब्लॉक का हिस्सा हैं।

यानी अल्पसंख्यक मतों को एकमुश्त अपने पाले में करने के लिए वो कांग्रेस से गठबंधन तो चाहती है, लेकिन अपनी शर्तों पर। इसकी वजह है हुमायूं कबीर और एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी का संभावित गठबंधन। वहीं केंद्र में कांग्रेस के नेताओं का एक तबका भी केंद्रीय राजनीति की तहत ममता से गठबन्धन चाहता है।

2. एकला चलो रे

वहीं कांग्रेस के बंगाल अध्यक्ष शुभंकर सरकार चाहते हैं, लेफ्ट का अब बंगाल में ताकत नहीं रहा। इसलिए हमको अकेले लड़कर पहले बीजेपी से मुख्य विपक्षी दल का दर्जा छीनना चाहिए।

3. लेफ्ट के साथ गठबन्धन

वहीं ममता के धुर विरोधी पूर्व बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी चाहते हैं कि, ममता और बीजेपी पर बराबर हमलावर रहते हुए लेफ्ट के साथ तालमेल हो। हालांकि, पिछले विधानसभा चुनाव में भी दोनों गठबंधन में लड़े थे, लेकिन नतीजा सिफर रहा था। बंगाल चुनाव को लेकर कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा है कि चुनाव में जब हम जाएंगे तो वहां के वोटर से हम क्या कहेंगे, तब सुनियेगा, अभी हम क्या जवाब दें।

हाल में कांग्रेस आलाकमान ने इस संबंध में सभी पक्षों से राय ले ली है और अब कांग्रेस आलाकमान को जल्दी से जल्दी बंगाल को लेकर फैसला करना होगा। बंगाल में इसी साल चुनाव होने हैं, ऐसे में कांग्रेस को तीन विकल्पों में से किसी एक रास्ते को चुनना होगा। अगर इसमें देरी होती है तो इसमें कोई शक नहीं कि उसका फायदा विरोधियों को मिलेगा।

ममता के किले को भेदने के लिए बीजेपी ने मैदान में उतारा ग्लैमरस चेहरा

चर्चा का विषय बनीं पामेला गोस्वामी

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल चुनाव को लगभग दो महीने बचे हैं। इस बार बंगाल चुनाव बीजेपी बनाम टीएमसी का है। राज्य में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सत्ता से बाहर करने के लिए बीजेपी पुरजोर कोशिश कर रही है, वहीं टीएमसी, बीजेपी को किसी भी हाल में बंगाल में सत्ता बनाने से रोकने पर काम कर रही है। अब बंगाल में एक नया चेहरा तेजी से चर्चा का विषय बना है। यह है पामेला गोस्वामी का। बीजेपी नेता पामेला गोस्वामी बंगाल में बीजेपी के लिए जमीन तैयार कर रही हैं। कहा जा रहा है कि बीजेपी ममता बनर्जी के सामने महिला विंग तैयार करके खड़ी कर रही है। इस महिला विंग में पामेला गोस्वामी का नाम है। पामेला गोस्वामी, 2021 में उसे समय अचानक चर्चा में आई थीं, जब उन्हें बंगाल पुलिस ने कोकीन के साथ गिरफ्तार किया था। उनके ऊपर ड्रग्स स्मगलिंग का केस लगा था। हालांकि इन आरोपों को सियासी कदम बताया गया था। कहा गया था कि टीएमसी, बीजेपी को फंसाने के लिए यह सब कर रही है। बाद में पामेला को ड्रग्स के सारे आरोपों से बरी कर दिया गया था। गौरतलब है कि सामाजिक कार्यकर्ता पामेला गोस्वामी भाजपा की युवा नेता हैं। पामेला गोस्वामी 2019 में बीजेपी में शामिल हुई थीं। उन्हें तत्कालीन बंगाल बीजेपी अध्यक्ष दिलीप घोष ने बीजेपी जॉइन करवाई थी। बीजेपी में आने के काफी पहले से पामेला गोस्वामी जमीनी स्तर पर काफी सक्रिय थीं। वह युवा मतदाताओं को लुभाने का काम कर रही

थीं। पामेला को भाजपा के हुगली जिले का पर्यवेक्षक बनाया गया था और साथ ही वह भाजपा बंगाल की महासचिव भी थीं।

पामेला का जन्म 14 मई 1993 को पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में हुआ था। पामेला के पिता का नाम कौशिक गोस्वामी और मां का नाम मधुचंदा गोस्वामी है। उनकी एक बहन भी हैं, जिनका नाम पुमेल है। पामेला की शुरुआती पढ़ाई कोलकाता के नामी स्कूल से हुई। उसके बाद उन्होंने द हेरिटेज अकादमी कोलकाता से पढ़ाई की। पामेला ने एमबीए किया है। वह बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी भाषा जानती हैं। पामेला के करियर की शुरुआत बतौर मॉडल के तौर पर हुई थी। मॉडलिंग के दौरान पामेला एयरहोस्टेस बन गईं और इंडिगो एयरलाइंस में काम करने लगीं। वह इंडिगो में सीनियर केबिन क्रू थीं, इसी बीच उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में आने का मौका मिला और वह बंगाली टीवी सीरियल्स और फिल्मों में काम करने लगीं। 2010 में पामेला ने बंगाली फिल्म 'मोन चाय टोम' में अपना एक्टिंग डेब्यू किया। उसके बाद उन्होंने कई फिल्म और टीवी सीरियल्स किए। 2016 में आई उनकी फिल्म संपर्क खूब हिट हुई थी। फिल्म इंडस्ट्री में काम के दौरान पामेला गोस्वामी ने प्रोबिर डे के साथ इंटीरियर डिजाइनिंग का बिजनेस भी शुरू किया। उन्होंने प्रोबिर एंजेलिना मर्केंटाइल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनाई और उसकी डायरेक्टर बनीं। उन्होंने अपने इंटीरियर डिजाइनिंग ब्रांड का नाम रोकोको रखा। पामेला गोस्वामी ने फ़िल्मी दुनिया को छोड़कर राजनीति में प्रवेश लेने का फैसला लिया और 2019 में बीजेपी में शामिल हो गईं।

निपाह व कोविड वायरस में नहीं है समानता : विशेषज्ञ

निज संवाददाता : निपाह वायरस इन्फेक्शन के दो कन्फर्म मामलों ने पश्चिम बंगाल में चिंता बढ़ा दी है। कई लोग इसके डेवलपमेंट और कोविड-19 महामारी के शुरुआती स्टेज के बीच समानताएं बता रहे हैं। लेकिन संक्रामक रोग विशेषज्ञ का कहना है कि दोनों बीमारियों के बीच समानताएं काफी हद तक वायरस शब्द पर ही खत्म हो जाती हैं, जो निपाह और कोविड के बीच बड़े अंतर को दिखाता है। वुडलैंड्स हॉस्पिटल में माइक्रोबायोलॉजी कंसल्टेंट और इंफेक्शन कंट्रोल के प्रमुख डॉ. दीप नारायण मुखर्जी ने कहा- निपाह कोविड से बिल्कुल अलग है। कोविड एक नया वायरस था जिसका सेकेंडरी अटैक रेट बहुत ज़्यादा था। यह सांस की बूंदों और हवा के ज़रिए आसानी से फैलता था, जिससे महामारी और आखिर में एक पैनडेमिक होता था।इसके उलट, निपाह वायरस कैज़ुअल सांस के संपर्क से नहीं फैलता है। यह लार, खून, सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड या यूरिन जैसे इंफेक्टेड बॉडी फ्लूइड के सीधे संपर्क से फैलता है।

विधानसभा चुनाव से पूर्व बंगाल बीजेपी ने किया नई राज्य कमेटी का ऐलान

निशीथ-सौमित्र अहम पदों पर

निज संवाददाता : बंगाल बीजेपी की नई राज्य कमेटी का ऐलान 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले हो गया। कमेटी में कई फेरबदल किए गए हैं। राज्य कमेटी के साथ-साथ मोर्चा प्रेसिडेंट के नामों का भी ऐलान किया गया है। सात मोर्चा कमेटियों के अध्यक्षों के नामों का ऐलान किया गया है। गौरतलब है कि बीजेपी के पुराने नेता शमिक भट्टाचार्य पहले ही राज्य बीजेपी के नए अध्यक्ष चुने जा चुके हैं। नई कमेटी का ऐलान उन्हें ध्यान में रखकर किया गया है। 12 लोगों को वाइस प्रेसिडेंट रखा गया है। सूची में पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री निशीथ प्रमाणिक शामिल हैं। मनोज टिग्गा, विधायक अग्निमित्रा पाल को जगह मिली है। तृणमूल से बीजेपी में शामिल हुए तपस रॉय को भी वाइस प्रेसिडेंट रखा गया है। पार्टी पर भेदभाव का आरोप लगाने वाले राजू बनर्जी को भी कमेटी में रखा गया है। सौमित्र खान को भी राज्य कमेटी में नियुक्त किया गया है। उन्हें महासचिव की ज़िम्मेदारी दी गई है। ज्योतिर्मय सिंह महतो को भी महासचिव की ज़िम्मेदारी दी गई है। विधायक शंकर घोष को सचिव की ज़िम्मेदारी दी गई है। बीजेपी का दावा है कि यह कमेटी पुराने और नए को मिलाकर बनाई गई है।

नई राज्य कमेटी की घोषणा के साथ ही बीजेपी के अलग-अलग फ्रंट के प्रेसिडेंट के नामों की भी घोषणा की गई है। सांसद खगेन मुर्मू को एसटी फ्रंट की ज़िम्मेदारी दी गई है। इंद्रनील खान युवा फ्रंट के अध्यक्ष बने हैं। फाल्गुनी पात्रा को महिला

फ्रंट की ज़िम्मेदारी दी गई है।

अली हुसैन को माइनॉरिटी फ्रंट की ज़िम्मेदारी दी गई है। ध्यान देने वाली बात यह है कि नई कमेटी में प्रियंका टिबरेवाल, विधायक अशोक डिंडा और कुछ विधायक नहीं हैं। बीजेपी सूत्रों के मुताबिक, जो उम्मीदवार हैं, उनमें से कुछ को सांगठनिक प्रभारी नहीं रखने का फ़ैसला किया गया। कमेटी उसी तरह बनाई गई है। सूत्रों की मानें तो एसआईआर प्रक्रिया पूरी होने के बाद राष्ट्रीय चुनाव आयोग विधानसभा चुनाव का कार्यक्रम अनाउंस कर सकता है। उसकी तैयारी भी शुरू हो गई है। इस बीच, राजनीतिक पार्टियां भी अपने-अपने दल के साथ मैदान में उतर गई हैं। इस माहौल में बंगाल बीजेपी में घबराहट की स्थिति है। राजनीतिक हलकों का दावा है कि राज्य नेतृत्व ने यह राज्य कमेटी बनाकर पार्टी के अंदर पनप रहे गुस्से को शांत करने की कोशिश की है।

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के शिविर में गंगासागर तीर्थयात्रियों को दी गई निःशुल्क सेवा

निज संवाददाता : मकर संक्रान्ति के शुभ अवसर पर गंगा सागर मेला में बाबूघाट स्थित श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति सेवा शिविर में बीते 56 वर्षों से निरंतर गंगासागर जाने वाले लाखों तीर्थयात्रियों की निः शुल्क एवं निःस्वार्थ सेवा करती आ रही है। इस बार भी समिति के अध्यक्ष विवेक गुप्ता के दिशा अनुसार गंगासागर सेवा किया गया। समिति के प्रधान सचिव विमल दीवान ने कहा-सह-सचिव पवन बंसल, सुभाष सांवलदावाला, मेला संयोजक मनोज चौधरी, दुर्शीचंद अग्रवाल ने कार्यक्रम की व्यवस्था संभाली। सभी कार्य समिति के पूर्व मार्गदर्शक स्व0 राजकुमार बोथरा के प्रेरणा से किया गया।दान दाता अविशेष

बगड़िया एवं आशीष बगड़िया द्वारा 100 कम्बल, दान दाता अरुन दीवान जी के द्वारा 100 कम्बल, दान दाता पवन जी के द्वारा 100 कम्बल साथ ही दान दाता मोहित चौधरी के द्वारा 200 चरण पादुका गंगासागर जाने वाले तीर्थयात्रियों को वितरण किया गया। इसके अलावा कैंप को सफल बनाने में उमा शंकर जोशी, सुमित झुनझुनवाला, सुशील जोशी, जयप्रकाश गुप्ता, महेश काबरा, सुभाष चंद्र गोयनका, महेश गोयनका, चेतन अग्रवाल, गोपाल अग्रवाल, आदित्य तुल्शियन ,सुनील सावदावाला, मोहित सुरेका, प्रदीप गोयनका, बनवारी गुप्ता, दीपक अग्रवाल आदि सहित बड़ी संख्या में समिति के सदस्य ,स्वयंसेवक एवं कार्यकर्त्ता मौजूद रहे। बाबू घाट से गंगासागर रवाना होने वाले श्रद्धालुओं के लिए हर जरूरी सुविधाचिकित्सा सहायता, रहने की जगह, दाल-भात, पूड़ी-सब्ज़ी, बुंदिया-भुजिया, रोटी-सब्ज़ी, चाय-बिस्कुट, चना-हलवा, चूड़ा-गुड़, साथ ही कम्बल, दुशाला, साड़ी, चरण पादुका इत्यादि की समिति द्वारा उपलब्ध कराई गई। खासकर बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष देखभाल की व्यवस्था की गई।

तीन हफ्ते बाद अलीपुर चिड़ियाघर के नाले से बाहर आया दरियाई घोड़ा

22 दिसंबर से नाले में फंसा हुआ था हिप्पो

निज संवाददाता : अलीपुर चिड़ियाघर में बीते तीन हफ्तों से बीमार पड़े चार वर्षीय नर दरियाई घोड़े (हिप्पोपोटेमस) की हालत में सुधार के संकेत मिले हैं। बीते रविवार को वह आखिरकार अपने बाड़े के पानी भरे नाले (मोट) से बाहर निकल आया। इससे पहले 22 दिसंबर से वह लगातार पानी में ही पड़ा हुआ था और रात के समय अपने शेल्टर में जाने से भी इनकार कर रहा था। चिड़ियाघर सूत्रों के अनुसार, दरियाई घोड़ा संभवतः किसी न्यूरोलॉजिकल समस्या या अगले पैर में चोट के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हो गया था। इलाज के दौरान उसे नसों को सक्रिय करने वाली दवाएं, एंटीबायोटिक इंजेक्शन और रे-थेरेपी दी गई। इन उपचारों का असर अब दिखाई देने लगा है और जानवर ने हलचल भी शुरू कर दी है। साथ ही उसने भोजन करना भी शुरू कर दिया है।हालांकि, फिलहाल इस दरियाई घोड़े को आम दर्शकों से

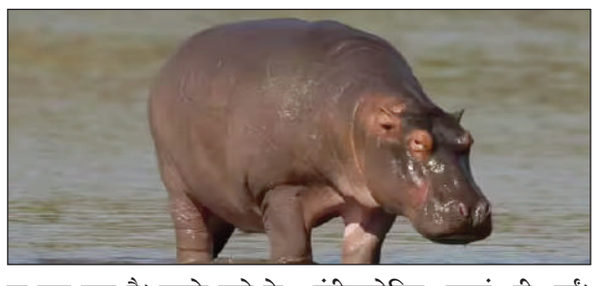

दूर रखा गया है। उसके बाड़े के आसपास व्यू-कटर लगाए गए हैं ताकि उसे आराम मिल सके। अलीपुर चिड़ियाघर के पशु चिकित्सकों ने ओडिशा के नंदनकानन चिड़ियाघर से भी संपर्क किया था, जहां से यह दरियाई घोड़ा 2024 में कोलकाता लाया गया था। नंदनकानन के वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. शरत कुमार साहू ने बताया कि अलीपुर चिड़ियाघर के अधिकारियों ने उनसे सलाह ली थी। उन्हें किसी न्यूरोलॉजिकल बीमारी की आशंका थी, इसलिए हमने न्यूरो-टॉनिक देने की सलाह दी।चिड़ियाघर सूत्रों के मुताबिक, दरियाई घोड़े के अगले पैर में दर्दनाक सूजन भी पाई गई थी, जिससे बैक्टीरियल संक्रमण की आशंका जताई गई। इसी कारण एंटीबायोटिक दवाएं दी गईं। इसके अलावा रे-थेरेपी के जरिए दर्द और जकड़न कम करने की कोशिश की गई। इलाज के तहत विटामिन बी1, बी6 और बी12 भी दिए गए, जो नसों की कार्यप्रणाली के लिए अहम माने जाते हैं। पूर्व चिड़ियाघर पशु चिकित्सक डी.एन. बनर्जी का कहना है कि बाड़े के चारों ओर बना कंक्रीट और पानी में उतरने का ढलान दरियाई घोड़े के पैर में चोट का कारण हो सकता है। सूजन इस बात की ओर इशारा करती है कि यह न्यूरोलॉजिकल समस्या से ज्यादा बैक्टीरियल संक्रमण का मामला हो सकता है, जिसने उसकी गतिविधि सीमित कर दी।सूत्रों के अनुसार, लगभग दो टन वजनी यह दरियाई घोड़ा 22 दिसंबर से नाले में फंसा हुआ था। शुरुआत में सूजन नजर नहीं आई, लेकिन पानी साफ करने के दौरान यह स्पष्ट हुई। इसके बाद इंजेक्शन के जरिए एंटीबायोटिक दी गई। चूंकि दरियाई घोड़े को लगातार पानी की जरूरत होती है, इसलिए इलाज के बाद नाले में दोबारा पानी भर दिया गया। चिड़ियाघर प्रशासन ने बताया कि जानवर की 24 घंटे निगरानी के लिए पांच सदस्यीय मेडिकल टीम गठित की गई है, जो अन्य चिड़ियाघरों के विशेषज्ञों से भी लगातार संपर्क में है। रे-थेरेपी को एक गैर-आक्रामक और बिना दवा की तकनीक बताया गया है, जिससे दर्द कम करने, जोड़ों की गतिशीलता बढ़ाने और अकड़न घटाने में मदद मिलती है।

हल करो हीरो बनो का उत्तर

1.अनुप्रश्थ तरंग, 2.प्रोटीन संश्लेषण, 3. व्हेल, 4. केंचुआ, 5.गामा किरणें, 6.माइटोकांड्रिया व क्लोरोप्लास्ट

संपादकीय

डोनाल्ड ट्रंप का ग्रीनलैंड पर कब्जा करने का इरादा व बढ़ता वैश्विक तनाव

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ग्रीनलैंड पर कब्जा करने के इरादे ने वैश्विक तनाव को बढ़ा दिया है। बर्फ की चादरों वाला एक आइलैंड, एक आदमीअमेरिका के राष्ट्रपतिकी बदलती प्राथमिकता की वजह से गर्मी महसूस कर रहा है। जब से डोनाल्ड ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्ज़ा करने का इरादा ज़ाहिर किया है उनके इरादे को बताने के लिए कोई और शब्द नहीं है तब से वैश्विक स्तर पर एक और बड़े संकट को टालने के लिए ज़ोरदार बातचीत शुरू हो गई है। लेकिन अभी तक, कोई हल नहीं निकला है। बुधवार को अमेरिका के वाइस-प्रेसिडेंट जे.डी. वेंस, अमेरिका के सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट, मार्को रुबियो और डेनमार्क के विदेश मंत्री, लार्स लोके रासमुसेन की बैठक में कोई कामयाबी नहीं मिली; बस राहत की बात यह है कि तुरंत तनाव बढ़ने से बच गया है। आने वाले हफ़्तों में इस विवादित मुद्दे पर एक वर्किंग ग्रुप फिर से बातचीत करने वाला है। हालांकि, लड़ने वाले पक्षों ने अपनी अड़चनें डाल रखी हैं। डोनाल्ड ट्रंप इस बात पर अड़े हुए हैं कि ग्रीनलैंड को चीन और रूस के इरादों से सुरक्षित रखने के लिए न सिर्फ़ अमेरिकन प्रोटेक्शन ज़रूरी है, बल्कि यह आइलैंड खुद अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी ज़रूरी है। इस बात पर आम राय है कि संरक्षणवाद की यह बातें डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से ग्रीनलैंड के बड़े खनिज स्रोत तक पहुंच बनाने का एक छोटा सा बहाना है। वेनेजुएला में उनके सैन्य कार्रवाई ने बढ़ती चिंताओं को और बढ़ा दिया है। डेनमार्क, जो सदियों से इस इलाके का इंचार्ज रहा है, ज़ाहिर है इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि वह इनमें से कुछ भी बर्दाश्त नहीं करेगा।

अमेरिका के ग्रीनलैंड पर हमले का असर ग्लोबल ऑर्डर पर बहुत बुरा होगा। नाटो के किसी सदस्य पर अंदर से हमला करने से अलायंस असल में दूसरे विश्व युद्ध के बाद की बिरादरी पर बहुत ज़्यादा दबाव पड़ेगा। डेनमार्क की डिफेंस मिनिस्ट्री ने ऐलान किया है कि वह ग्रीनलैंड में सैन्य अभ्यास करेगी। कम से कम तीन नाटो सदस्य देशों जर्मनी, फ्रांस और स्वीडन ने कहा है कि वे इस कोशिश में हिस्सा लेंगे। नाटो के अंदर ये छोटी-छोटी दरारें, अगर और गहरी होती गईं, तो अमेरिका, नाटो और यूरोपियन यूनियन के बीच रिश्तों को पूरी तरह से बदल सकती हैं। अगर भविष्य में हालात ऐसे मोड़ लेते हैं तो मॉस्को और बीजिंग दुखी नहीं होंगे। लेकिन पश्चिम और उसका बहुत बड़ा नियम-आधारित सिस्टम बदनाम हो जाएगा, शायद बिखर जाएगा। शायद ऐसा अस्तित्व का संकट पश्चिमी दुनिया के ठंडे दिमाग वाले लोगों को एक ऐसे समाधान के लिए और ज़्यादा कोशिश करने के लिए उकसाएगा जो बराबरी का हो। लेकिन उनका काम बहुत मुश्किल लगता है। उनका मुकाबला एक ऐसे अमेरिकी राष्ट्रपति से है जिसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता, जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय स्थिरता यहां तक कि शांति भी अमेरिकी दबदबे की परेशान करने वाली कल्पना से कम मायने रखती है।

जानें अपना राशिफल

मेष

मनोरंजन करने वाला समय हो सकता है, कोई रुका हुआ मांगलिक कार्य पुरा हो सकता है प्रयास करे, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, जीवनसाथी पुरा साथ दे सकते हैं।

वृषभ

मिलाप वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है, अपनी बुद्धिमानी दिखाने की आवश्यकता है, मन वश में रखे।

मिथुन

ताकतवर समय हो सकता है, कोई रुका हुआ जमीन का काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, कोई वाहन खरिदने का विचार हो सकता है, परिवार के लोग पुरा साथ दे सकते हैं, मन में उत्साह रहेगा।

कर्क

भावुकता भरा समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई परिवार का सदस्य आपका समय खराब कर सकता है, आपसी प्रेम बनाये रखे, मन स्थिर रखे।

सिंह

लापरवाही वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सावधान रहकर ही करे, किसी पर ज्यादा भरोसा नुकसान भी कर सकता है, बिना काम बाहर नहीं जाये, मन शान्त रखे।

कन्या

समझदारी दिखाने वाला समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, मित्र पुरा साथ दे सकते हैं, मन में उत्साह रहेगा।

तुला

सहमति भरा समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, किसी नये व्यक्ति से काम करने पर विचार हो सकता है जो फायदेमंद होगा, मन प्रसन्न रहेगा।

वृश्चिक

प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला समय हो सकता है, कोई पुराने मित्र काम आ सकते हैं, पुरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की जरूरत है, मन में विश्वास रखे।

धनु

लेनदेन वाला समय हो सकता है इसलिए पुरी सावधानी से काम करने की आवश्यकता है, ज्यादा खर्च परेशानी का कारण बन सकता है सावधान रहे, अपने परिवार को प्रसन्न रखे, मन शान्त रखे।

मकर

हानीकारक समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से नुकसान भी हो सकता है, बिना काम बाहर नहीं जाये, मन वश में रखे।

कुंभ

शान्तिपूर्ण समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की जरूरत है, मन स्थिर रखे।

मीन

इच्छापूर्ण होने वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, कोई वाहन खरिदने का विचार हो सकता है, मन में संतोष रखे।

भारत सरकार के 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' अभियान में मध्यप्रदेश ने रचा इतिहास

विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को आसानी से मिल रहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रसिद्ध शोध पत्रिकाएं, पुस्तकें

प्रदेश के 617 से अधिक उच्च शिक्षण संस्थानों ने कराया पंजीयन

निज संवाददाता : मध्यप्रदेश ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल क़ी है। भारत सरकार के महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' (एक राष्ट्र, एक सदस्यता) के क्रियान्वयन में पूरे देश में सिरमौर बनकर उभरा है। वैश्विक स्तर की शोध पत्रिकाओं (जर्नल्स) और डिजिटल लाइब्रेरी तक विद्यार्थियों की पहुंच बनाने में मध्य प्रदेश ने कर्नाटक और राजस्थान जैसे राज्यों को काफी पीछे छोड़ दिया है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किए गए 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' पोर्टल पर पंजीयन कराने में मध्यप्रदेश देशभर में सबसे आगे हैं। प्रदेश के कुल 617 उच्चर शिक्षण संस्थानों ने अब तक पोर्टल पर पंजीयन कराया है। दूसरे नंबर पर कर्नाटक राज्य है। यहां के 480 संस्थानों द्वारा पंजीयन कराया गया है। प्रदेश में योजना के बेहतर क्रियान्वयन के लिए प्रथम चरण में प्रदेश स्तर पर एक नोडल अधिकारी बनाया गया। दूसरे चरण में प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थानों में संस्था वार नोडल अधिकारी नामांकित किया गया। इसके बाद तृतीय चरण में संस्था के नोडल अधिकारी द्वारा संस्था के प्राध्यापकों एवं संस्था में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को नामांकित करके उनके आईडी एवं पासवर्ड जनरेट कर यूजर्स को उपलब्ध कराया जाता है। फिर यूजर को आईडी पासवर्ड के माध्यम से ओएनओएस पोर्टल पर जाकर लॉगिन करना होगा। इसके बाद यूजर पोर्टल पर उपलब्ध शोध पत्रों/पुस्तकों को निःशुल्क पढ़ सकता है।

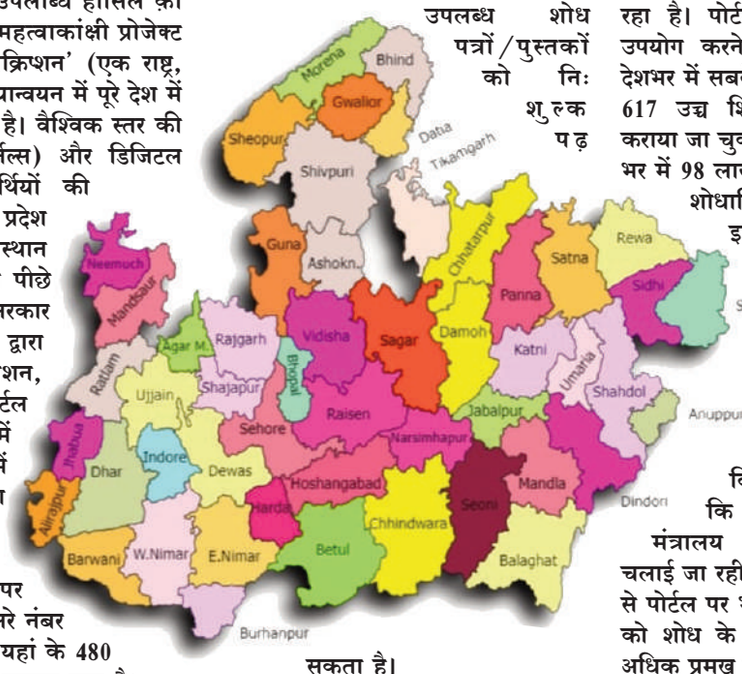

देशभर में 98 लाख 44 हजार 813 यूजर, इसमें मध्य प्रदेश से 8 लाख 38 हजार से अधिक

विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्राध्यापकों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाएं जर्नल्स और पुस्तोकें एक ही जगह पर आसानी से उपलब्ध हो सके, इसके लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा ''वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन'' योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना के माध्यम से भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा 30 प्रमुख प्रकाशनों के शोध पत्रों (जर्नल्स) एवं पुस्तकों को वन नेशन वन सब्सपक्रिप्शपन पोर्टल पर आसानी से उपलब्ध कराया जा रहा है। पोर्टल पर डिजिटल शिक्षा का उपयोग करने के मामले में मध्यपप्रदेश देशभर में सबसे आगे है। अब तक प्रदेश के 617 उच्च शिक्षण संस्थों द्वारा पंजीयन कराया जा चुका है। आज की स्थिति में देश भर में 98 लाख 44 हजार 813 विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्राध्यापकों द्वारा इसका उपयोग किया जा रहा है। इससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शोध संवर्धन और वैश्विक ज्ञान तक समान पहुंच को बढ़ावा मिल रहा है।

अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा विभाग अनुपम राजन ने बताया कि भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा ओएनओएस योजना चलाई जा रही है। इस योजना के माध्यमक से पोर्टल पर भारत सरकार द्वारा विद्यार्थियों को शोध के लिए देश विदेश के 30 से अधिक प्रमुख प्रकाशकों की शोध पत्रिकाएं व पाठय-पुस्तकें नि:शुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं। पोर्टल पर पंजीयन कराने के मामले में मध्य प्रदेश, देशभर में सबसे आगे हैं। प्रदेश के 617 उच्चय शिक्षण संस्थान अब तक पंजीयन करा चुके हैं। 8 लाख 38 हजार से अधिक विद्यार्थी-शोधार्थी पोर्टल का उपयोग कर रहे हैं। इस मामले में भी मध्यमप्रदेश पूरे देश में प्रथम स्थान पर है।

वन क्षेत्रों के समीप ग्रामों में रहने वाले पशुपालकों के विकास की पहल

निज संवाददाता : पशुपालन एवं डेयरी विभाग मंत्री लखन पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार दुग्ध उत्पादन को दोगुना करने और वन-वन्यजीव संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि इसके लिए अब एक नई पहल की गई है। इस पहल के अंतर्गत वन क्षेत्रों के समीपस्थ ग्रामों में रहने वाले पशुपालकों के सतत विकास, उनकी आजीविका में सुधार तथा वन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के बीच सामंजस्य स्थापित किया जाएगा। राज्यमंत्री पटेल ने बताया कि प्रदेश के समस्त वन क्षेत्रों-अभ्यारण्यों-राष्ट्रीय उद्यानों की पांच किलोमीटर परिधि में स्थित ग्रामों का चयन कर, चरणबद्ध रूप से ''क्षीर धारा ग्राम'' के रूप में विकसित किया जाएगा। पशुपालन मंत्री लखन पटेल ने बताया कि यह अभिसरण पशुपालकों की आजीविका सुरक्षा एवं वन संपदा के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके क्रियान्वयन के लिए दो चरणों की रणनीति बनाई गई है। प्रत्येक वन मंडल से कुछ ग्रामों को ''क्षीर धारा ग्राम योजना'' के निर्धारित मापदंडों के आधार पर पहले चरण के लिए चयनित किया जाएगा। इस चयन में कम पशु संख्या वाले, जागरूक पशुपालक तथा सक्रिय सदस्यों वाली संयुक्त वन प्रबंधन समिति के ग्रामों को प्राथमिकता दी जाएगी। इन ग्रामों में शत-प्रतिशत उच्च नस्ल से गर्भाधारण, पशु स्वास्थ्य (टीकाकरण व टैगिंग) एवं हरा चारा उत्पादन पर तत्काल ध्यान केंद्रित किया जाएगा। दूसरे चरण में शेष सभी पात्र ग्रामों को योजना में लाया जाएगा।पशु संरक्षण के लिए होंगी कई गतिविधिया पशुपालन मंत्री लखन पटेल ने बताया कि चयनित ग्रामों में पशुपालन विभाग द्वारा ''क्षीर धारा ग्राम'' में तकनीकी नेतृत्व, प्रशिक्षण एवं आधारभूत पशु स्वास्थ्य सेवाएं, कृत्रिम गर्भाधान, बधियाकरण एवं पशु जागरूकता, बांझ निवारण शिविरों का आयोजन जैसी गतिविधियां की जाएंगी। साथ ही, इन गतिविधियों की मासिक प्रगति की निगरानी की जाएगी।

चयनित ग्रामों के संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के सदस्य इस योजना में ''संवाहक एवं सहयोगी'' की भूमिका में कार्य करेंगे। पशुपालन विभाग द्वारा की जाने वाली समस्त गतिविधियों में सहयोग के साथ आवारा पशु प्रबंधन में सहयोग भी प्रदान किया जाएगा।संयुक्त अभिसरण समिति का होगा गठनपशुपालन मंत्री ने बताया कि अभिसरण के समन्वय एवं पर्यवेक्षण के लिए जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में एक संयुक्त अभिसरण समिति का गठन किया जाएगा, जिसके सदस्य के रूप में जिला उपसंचालक पशुपालन एवं डेयरी तथा जिला वन मंडल अधिकारी होंगे।

फिलोसोफी के एक प्रोफेसर ने कुछ चीजों के साथ क्लास में प्रवेश किया। जब क्लास शुरू हुई तो उन्होंने एक बड़ा सा खाली शीशे का जार लिया और उसमे पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े भरने लगे। फिर उन्होंने स्टूडेन्ट से पूछा कि क्या जार भर गया है? और सभी ने कहा ''हाँ''। तब प्रोफ़ेसर ने छोटे-छोटे कंकडों से भरा एक बॉक्स लिया और उन्हें जार में भरने लगे। जार को थोडा हिलाने पर ये कंकड़ पत्थरों के बीच सेटेल हो गए। एक बार फिर उन्होंने छात्रों से पूछा कि क्या जार भर गया है? और सभी ने हाँ में उत्तर दिया।

तभी प्रोफेसर ने एक स्टेन्ड बॉक्स निकाला और उसमे भरी रेत को जार में डालने लगे। रेत ने बची-खुची जगह भी भर दी, और एक बार फिर उन्होंने पूछा कि क्या जार भर गया है? और सभी ने एक साथ उत्तर दिया,'' हाँ''फिर प्रोफेसर ने समझाना शुरू किया,'' मैं चाहता हूँ कि आप इस बात को समझें कि ये जार आपकी लाइफ को रीप्रेजेंट करता है। बड़े-बड़े पत्थर आपके जीवन की ज़रूरी चीजें हैं- आपकी फेमिली, आपका पार्टनर, आपकी हेल्थ, आपके बच्चे ऐसी चीजें कि अगर आपकी बाकी सारी चीजें खो भी जाएँ और सिर्फ ये रहे तो भी आपकी ज़िन्दगी पूर्ण रहेगी। ये कंकड़ कुछ अन्य चीजें हैं जो मेटर करती हैं- जैसे कि आपकी जॉब, आपका घर, इत्यादि। और ये रेत बाकी सभी छोटी-मोटी चीजों को दर्शाती है.

अगर आप जार को पहले रेत से भर देंगे तो कंकडों और पत्थरों के लिए कोई जगह नहीं बचेगी। यही आपकी लाईफ के साथ होता है। अगर आप अपनी सारा समय और उर्जा छोटी-छोटी चीजों में लगा देंगे तो आपके पास कभी उन चीजों के लिए टाईम नहीं होगा जो आपके लिए इमर्पोटेंट हैं। उन चीजों पर ध्यान दीजिये जो आपकी हैपीनेस के लिए ज़रूरी हैं। बच्चों के साथ खेलिए, अपने पार्टनर के साथ डांस कीजिये. काम पर जाने के लिए, घर साफ़ करने के लिए, पार्टी देने के लिए, हमेशा वक़्त होगा। पर पहले पत्थरों पर ध्यान दीजिये ऐसी चीजें जो सचमुच मेटर करती हैं। अपनी प्रीयोरीटी सेट कीजिये, बाकी चीजें बस रेत हैं।''

कहानियां

बाज की उड़ान

एक बार की बात है कि एक बाज का अंडा मुर्गी के अण्डों के बीच आ गया। कुछ दिनों बाद उन अण्डों में से चूजे निकले, बाज का बच्चा भी उनमे से एक था। वो उन्ही के बीच बड़ा होने लगा। वो वही करता जो बाकी चूजे करते, मिटटी में इधर-उधर खेलता, दाना चुगता और दिन भर उन्हीकी तरह चूँ-चूँ करता। बाकी चूजों की तरह वो भी बस थोडा सा ही ऊपर उड़ पाता, और पंख फड़-फडाते हुए नीचे आ जाता। फिर एक दिन उसने एक बाज को खुले आकाश में उड़ते हुए देखा, बाज बड़े शान से बेधड़क उड़ रहा था। तब उसने बाकी चूजों से पूछा, कि-'' इतनी उचाई पर उड़ने वाला वो शानदार पक्षी कौन है?'' तब चूजों ने कहा-'' अरे वो बाज है, पक्षियों का राजा, वो बहुत ही ताकतवर और विशाल है, लेकिन तुम उसकी तरह नहीं उड़ सकते क्योंकि तुम तो एक चूजे हो!'' बाज के बच्चे ने इसे सच मान लिया और कभी वैसा बनने की कोशिश नहीं की। वो ज़िन्दगी भर चूजों की तरह रहा, और एक दिन बिना अपनी असली ताकत पहचाने ही मर गया।

दोस्तों, हममें से बहुत से लोग उस बाज की तरह ही अपना असली potential जाने बिना एक second-class ज़िन्दगी जीते रहते हैं, हमारे आस-पास की mediocrity हमें भी mediocre बना देती है। हम में ये भूल जाते हैं कि हम आपार संभावनाओं से पूर्ण एक प्राणी हैं। हमारे लिए इस जग में कुछ भी असंभव नहीं है, पर फिर भी बस एक औसत जीवन जी के हम इतने बड़े मौके को गँवा देते हैं। आप चूजों की तरह मत बनिए, अपने आप पर, अपनी काबिलियत पर भरोसा कीजिए. आप चाहे जहाँ हों, जिस परिवेश में हों, अपनी क्षमताओं को पहचानिए और आकाश की ऊँचाइयों पर उड़ कर दिखाइए क्योंकि यही आपकी वास्तविकता है।

हल करो हीरो बनो

1. प्रकाश तरंगे किस प्रकार की तरंगे होती है?
(क) अनुप्रश्थ तरंग (ख) अनुदैर्ध्य तरंग
(ग) A और B दोनो (घ) कोई नही
2. राइबोसोम निम्नलिखित में से किसके लिए कार्यस्थल है?
(क) प्रकाश संश्लेषण (ख) वसा संश्लेषण
(ग) श्वसन (घ) प्रोटीन संश्लेषण
3. निम्नलिखित में से किस जलीय जंतु में गलफड़े नही होते है?
(क) ऑक्टोपस (ख) व्हेल
(ग) क्लाउन फिस (घ) स्किड
4. कौन सा जीव त्वचा से सांस लेता है?
(क) साँप (ख) केंचुआ
(ग) बन्दर (घ) मनुष्य
5. निम्नलिखित में से किसकी तरंगदैर्ध्य सबसे कम होती है?
(क) दृश्यमान किरणें (ख) गामा किरणें
(ग) अवरक्त किरणें (घ) X किरणें
6. निम्नलिखित में से कौन सा अंग एक प्रोकैरीयोटीक कोशिका में समानता दिखाता है?
(क) माइटोकांड्रिया (ख) क्लोरोप्लास्ट
(ग) माइटोकांड्रिया व क्लोरोप्लास्ट (घ) इनमें से कोई नहीं **(उत्तर इसी अंक में)**

माथापच्ची–18

				6	3		2	
			5					9
	6		1	9			3	
5		3	8			6		1
	8			7			9	
7		6			1	4		8
	3			1	6		8	
9					7			
	5		4	2				

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 17 का हल

6	2	9	8	5	1	4	7	3
3	1	4	7	6	2	9	5	8
7	5	8	4	3	9	6	1	2
2	8	3	5	9	7	1	6	4
5	6	7	1	4	8	2	3	9
4	9	1	3	2	6	5	8	7
9	7	5	2	1	3	8	4	6
1	3	2	6	8	4	7	9	5
8	4	6	9	7	5	3	2	1

मार लो मुस्की

ग्राहक: बासमती चावल दिखाओ तो जरा?
दुकानदार : यह देखिए !
ग्राहक : लेकिन इसमें खुशबू नहीं आ रही है?
दुकानदार: आप तुरंत आरटीपीसीआर टेस्ट करा ले।
ग्राहक: नहीं, वैसी बात नहीं है, अभी आ रही है थोड़ी-थोड़ी, 5 किलो दे दो!

⏩⏩⏩⏩⏩

पति- वैक्सीन लगवा ली?
पत्नी- हां लगवा ली.
पति- फेसबुक पर तो फोटो अपलोड करी नहीं तुमने.
पत्नी- फोटो तो खींच ली है, पर जब 25 साल वालों की बारी आएगी, तब अपलोड करूंगी.

⏩⏩⏩⏩⏩

आज कोरोना से पूछा ''तू सबके घर में और पब्लिक के फंक्शन में जाता है पर तू चुनाव में क्यों नहीं जाता?'' तो साला बेशर्म कहता है ''मैं अभी अठारह साल का कहां हुआ हूँ?''

⏩⏩⏩⏩⏩

संता वैक्सीन लगवा कर घर आया, कुछ ही मिनटों में उसकी नाक, कान और मुंह सूज गए
ना ना यह कोई साइड इफ़ेक्ट नहीं था... उसने तो पत्नी को सिर्फ़ इतना बताया था कि वैक्सीन देनेवाली नर्स अच्छी थी

⏩⏩⏩⏩⏩

पत्नी- सुनो जी सोमवार को बाजार, मंगल को होटल का प्रोग्राम, बुध को घूमने जाएंगे।
गुरुवार रेस्टोरेंट, शुक्रवार मूवी देखेंगे, शनिवार को पिकनिक..
पति- जरूर, और रविवार को मंदिर जाएंगे।
पत्नी-क्यों ?
पति- कटोरा लेकर भीख मांगने।

⏩⏩⏩⏩⏩

महिला: भैय्या दूध में इतनी मिलावट करते हो कुछ तो भगवान से डरो।
दूधवाला: मिलावट की बात आप तो करो ही मत बहनजी, अपनी फेसबुक वाली डीपी देखो और अभी अपनी शक्ल आईने में देखो..
भगवान क्या खुद से डर जाओगी।
शुक्र मनाओ हम कमेन्ट नहीं किये हैं उस पर, लाओ चुपचाप भगौना दो ...!

⏩⏩⏩⏩⏩

शादी के बाद पहली बार बहू रसोई मे गई और रेसिपी बुक में पढ़कर खाना बना रही थी।
सास बाहर से घर लौटी, फ्रिज खोला, अन्दर देखकर चकराई और पूछा: ''ये मन्दिर का घण्टा फ्रिज में क्यों रखा है ?''
बहू : ''किताब में लिखा है, सब चीजों का मिश्रण कर लें और एक घण्टा फ्रिज में रखें ।''

⏩⏩⏩⏩⏩

भाभी जी एक बैंक में गई और कहा... मुझे एक ज्वाइंट खाता ओपन करवाना है।
बैंक कर्मचारी (पप्पू) - अपने पति के साथ क्या मैम?
भाभी जी- नहीं, जिसके खाते में ढ़ेर सारे रुपये हो...
बैंक कर्मचारी हुआ बेहोश!

⏩⏩⏩⏩⏩

दो गांव की औरतें आपस में बात कर रही थी।
पहली औरत- पता है, अपने गांव के प्रधान कोमा में चले गए हैं।
दूसरी औरत- हां बहन, ये पैसे वाले लोग तो कहीं भी जा सकते हैं। मौत तो हम गरीबों की है।

⏩⏩⏩⏩⏩

सजधज के एक देहाती लड़की एयरपोर्ट पहुंचकर पायलट से बोली...
लड़की- फ्लाइट कितने बजे जाएगी?
पायलट-10 बजे, लड़की-अच्छा, दूसरी कितने बजे जाएगी?
पायलट-2 बजे, लड़की-अच्छा और ये वाली कब जाएगी?
पायलट-2:30 बजे, क्यों ?
जाना कहां है? लड़की-जाना कहीं नहीं बस रनवे पर एक इंस्टा रील शूट करनी है।

बढ़ता जा रहा है बंगाल में निपाह वायरस का असर

जानना जरूरी है निपाह से जुड़ीं कुछ महत्वपूर्ण बातें

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में इन दिनों निपाह वायरस का असर देखा जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अभी राज्य के कुल पांच लोगों को निपाह से संक्रमित पाया गया है। पहले जिन दो स्वास्थ्य कर्मियों को संक्रमित पाया गया था, उनका अब भी आईसीयू में इलाज चल रहा है। दोनों की हालत गंभीर बताई जा रही है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने इन मरीजों के संपर्क में आए करीब 120 लोगों को ट्रैक किया है। इन्हें होम आइसोलेशन में रहने की सलाह दी गई है।

पश्चिम बंगाल में बढ़ती इस संक्रामक बीमारी ने डॉक्टर्स को अलर्ट कर दिया है।

गौरतलब है कि निपाह वायरस के संक्रमण की दर और इससे मृत्यु का खतरा दोनों ही अधिक रहता है। संक्रमण का शिकार रहे 40-70 फीसद मरीजों की मौत हो जाती है। इन जोखिमों को ध्यान में रखते हुए स्थानीय लोगों को सावधानी बरतते रहने की सलाह दी गई है।

मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से, एक अधिकारी ने कहा-संक्रमण के स्रोत का पता लगाना मुश्किल है। यह एक से दूसरे व्यक्ति में फैलने वाला ट्रांसमिशन हो सकता है या फिर संभव है कि संक्रमण दूषित फलों के माध्यम से फैला हो। मरीजों की राज्य के बाहर की कोई ट्रैवेल हिस्ट्री भी नहीं है।

स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि राज्य के कई प्रवासी मजदूर इस समय के आसपास घर लौटते हैं, तो इससे ट्रांसमिशन का खतरा हो सकता है, फिलहाल ये बीमारी फैल कैसे रही है इसका पता लगाने की कोशिश की जा रही है।

वहीं, स्वास्थ्य सचिव नारायण स्वरूप ने मीडिया को बताया कि हम सभी जरूरी कदम उठा रहे हैं और प्रोटोकॉल का पालन कर रहे हैं। निपाह को लेकर घबराने की कोई जरूरत नहीं है। इस बीच, पश्चिम बंगाल में निपाह वायरस से मौतों के बाद इसका पड़ोसी झारखंड स्वास्थ्य विभाग अलर्ट है। स्वास्थ्य मंत्री ने सभी जिलों को सख्त निगरानी, त्वरित रिपोर्टिंग और जन-जागरूकता के निर्देश दिए। फिलहाल यहां कोई मरीज नहीं मिला है।

निपाह वायरस के संक्रमण को कई अध्ययनों में कोरोनावायरस से अधिक खतरनाक बताया जाता रहा है। इससे संक्रमितों की हालत तेजी से बिगड़ती जाती है। गंभीर स्थितियों में आईसीयू और वेंटिलेटर की भी जरूरत हो सकती है। निपाह का संक्रमण फेफड़े और ब्रेन को भी अटैक करता है। कुछ मरीजों में संक्रमण के एन्सेफलाइटिस होने के मामले भी देखे गए हैं।

10 प्वाइंटस में निपाह वायरस से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

1.निपाह वायरस एक गंभीर और जानलेवा जूनोटिक रोग है, जिसका मतलब है कि ये जानवरों से इंसानों में फैलता है। मुख्य रूप से ये चमगादड़ों में पाया जाता है और जब इन चमगादड़ों द्वारा दूषित फल इंसान खा लेते हैं तो इसे संक्रमण का खतरा हो सकता है। चमगादड़ों के लार और मूत्र से दूषित खाद्य पदार्थ भी संक्रमण का कारण हो सकते हैं।

2. निपाह वायरस इसलिए ज्यादा खतरनाक माना जाता है क्योंकि यह तेजी से शरीर में फैलकर दिमाग और फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है। कई मामलों में यह संक्रमण बहुत जल्दी गंभीर रूप ले लेता है, जिससे मरीज की जान को खतरा हो सकता है।
3. निपाह वायरस के शुरुआती लक्षण सामान्य वायरल संक्रमण जैसे होते हैं, जिससे इसे पहचान में देरी हो सकती है। संक्रमितों को तेज बुखार, सिरदर्द, थकान, मांसपेशियों में दर्द और उल्टी की शिकायत हो सकती है। शुरुआत में हल्के लगने वाले ये लक्षण तेजी से गंभीर होते जाते हैं।
4. निपाह वायरस का असर फेफड़ों पर भी पड़ सकता है। संक्रमित व्यक्ति को सांस लेने में दिक्कत, तेज खांसी और सीने में जकड़न महसूस हो सकती है। कुछ मामलों में निमोनिया जैसी स्थिति बन जाती है, जिससे ऑक्सीजन लेवल गिरने लगता है। इसके साथ ही मरीज को चक्कर आना, भ्रम की स्थिति और बोलने में परेशानी भी हो सकती है।
5. निपाह वायरस की सबसे गंभीर जटिलता एन्सेफेलाइटिस यानी मस्तिष्क में सूजन होना है। जब वायरस दिमाग तक पहुंचता है, तो इससे मरीज को दौरे पड़ सकते हैं। इसके अलावा भ्रम, व्यवहार में बदलाव और याददाश्त कमजोर होने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कई मामलों में मरीज कोमा की हालत में भी चला जाता है।
6. मेडिकल रिपोर्ट्स से पता चलता है कि कुछ मरीजों में संक्रमण ठीक होने के बाद भी लंबे समय तक न्यूरोलॉजिकल समस्याएं बनी रहती हैं। जिन स्थानों पर इसका जोखिम रहता है वहां लोगों को बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। पिछले साल ये वायरस केरल में भी प्रकोप मचा चुका है।
7. निपाह वायरस की मृत्यु दर काफी अधिक मानी जाती है, जो लगभग 40 से 70 प्रतिशत तक हो सकती है। ग्रामीण और कम संसाधन वाले इलाकों, जहां समय पर रोग की पहचान और इलाज नहीं हो पाती है वहां पर खतरा और बढ़ जाता है।
8. फिलहाल निपाह वायरस का कोई विशेष विशेष इलाज या वैक्सीन उपलब्ध नहीं है। मरीज का इलाज लक्षणों के आधार पर किया जाता है, जिसमें बुखार नियंत्रित करना, सांस की मदद और आईसीयू सपोर्ट शामिल है। गंभीर मामलों में वेंटिलेटर की जरूरत पड़ सकती है। समय पर पहचान और सही देखभाल से मरीज की जान बचाने की संभावना बढ़ सकती है।
9. निपाह वायरस से बचाव ही सबसे कारगर तरीका है। खुले में रखे फल खाने से बचें और अच्छी तरह धोकर ही फल का सेवन करें। जिन इलाकों में निपाह के मामले सामने आए हों, वहां लोगों को खास सावधानी बरतनी चाहिए। चमगादड़ों के रहने के स्थान या बीमार जानवरों से दूरी बनाए रखें।
10. निपाह का संक्रमण किसी को भी हो सकता है, हालांकि जिनकी इम्युनिटी कमजोर होती है उनमें रोग का खतरा अधिक हो सकता है। अगर किसी व्यक्ति में तेज बुखार, सिरदर्द, उल्टी, सांस की तकलीफ या मानसिक भ्रम जैसे लक्षण दिखें और वह निपाह प्रभावित क्षेत्र में रहा हो, तो तुरंत उससे दूरी बनाए रखें और उसे डॉक्टर के पास भेजें।

दुनिया में सबसे तेज एआई मॉडल अपनाने वाला देश बना भारत

अमेरिका को भी छोड़ा पीछे

निज संवाददाता : भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मॉडल अपनाने के मामले में दुनिया में सबसे तेज देश के रूप में उभरकर सामने आया है। इसमें भारत ने अमेरिका को भी पीछे छोड़ दिया है। यह खुलासा थॉटवर्क्स की रिपोर्ट में हुआ है। खास तौर पर बड़े लैंग्वेज मॉडल यानी एलएलएम का इस्तेमाल भारत में सबसे तेज़ी से बढ़ा है। चैट जीपीटी, जेमिनी और प्रीप्लेक्सिटी जैसे पॉपुलर एआई ऐप्स के सबसे ज्यादा मंथली और डेली एक्टिव यूज़र्स अब भारत में हैं जिससे देश की मजबूत मौजूदगी साफ नजर आती है।बीओएफए की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की यह तेज बढ़त किसी एक वजह से नहीं बल्कि कई बड़े फैक्टर्स के मेल से संभव हुई है। भारत के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी ऑनलाइन आबादी है जहां 70 से 75 करोड़ लोग मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं। इसके साथ ही सस्ते डेटा प्लान्स ने एआई टूल्स तक पहुंच को बेहद आसान बना दिया है। आज भारत में यूज़र्स सिर्फ करीब दो डॉलर खर्च करके महीने में 20 से 30जीबी तक डेटा इस्तेमाल कर पा रहे हैं जो कई देशों के मुकाबले बहुत सस्ता है।गौरतलब है कि भारत की इंटरनेट यूज़र आबादी का बड़ा हिस्सा युवा है। रिपोर्ट के अनुसार, 60 फीसद से ज्यादा इंटरनेट यूज़र्स की उम्र 35 साल से कम है। इनमें से काफी लोग अंग्रेज़ी समझते और बोलते हैं जिससे वे नए डिजिटल टूल्स और एआई ऐप्स को तेजी से अपनाते हैं। यही वजह है कि भारत में एआई सिर्फ एक्सपेरिमेंट तक सीमित नहीं है, बल्कि रोजमर्रा की ज़िंदगी और काम का हिस्सा बनता जा रहा है।एआई को लोकप्रिय बनाने में टेलीकॉम कंपनियों की भूमिका भी अहम बताई गई है। बीओएफए की रिपोर्ट में कहा गया है कि जियो और भारती एअरटेल जैसी कंपनियां अपने ग्राहकों को जेमिनी और प्रीप्लेक्सिटी जैसे एआई ऐप्स के पेड वर्ज़न का फ्री सब्सक्रिप्शन दे रही हैं। इससे यूज़र्स को बिना ज्यादा खर्च किए एडवांस एआई टूल्स इस्तेमाल करने का मौका मिल रहा है जबकि एआई कंपनियों और टेलीकॉम ऑपरेटर्स दोनों को अपने-अपने फायदे मिल रहे हैं।भारत में यूज़र्स एआई टूल्स का इस्तेमाल सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि पढ़ाई, स्किल डेवलपमेंट और प्रोडक्टिविटी बढ़ाने के लिए कर रहे हैं. अलग-अलग भारतीय भाषाओं में एआई मॉडल उपलब्ध होने से भाषा की बाधा भी कम हो रही है। बीओएफए इसे एआई का डेमोक्रेटाइजेशन यानी हर वर्ग तक तकनीक की पहुंच बढ़ने की प्रक्रिया मानता है।रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि आने वाले समय में भारत अगली पीढ़ी की एआई टेक्नोलॉजी, यानी एजेंटिक एआई के लिए एक बड़ा टेस्टिंग प्लेटफॉर्म बन सकता है। इस तरह के एआई सिस्टम खुद से सोचने, योजना बनाने और काम को अंजाम देने में सक्षम होते हैं। भारत की विशाल और विविध यूज़र बेस के चलते इन तकनीकों को रियल वर्ल्ड कंडीशन्स में परखना आसान होगा, इससे पहले कि इन्हें वैश्विक स्तर पर लॉन्च किया जाए।बीओएफए का मानना है कि भविष्य में ग्लोबल एआई कंपनियां भारतीय फर्म्स के साथ मिलकर सर्विस और फुलफिलमेंट मॉडल पर काम कर सकती हैं। यह मॉडल कुछ हद तक वैसा ही हो सकता है जैसा अमेरिका में एआई एजेंट्स ट्रैवल प्लेटफॉर्म्स के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। कुल मिलाकर, रिपोर्ट यह संकेत देती है कि एआई की अगली बड़ी कहानी भारत से निकल सकती है।

मकर संक्रांति खुशियों और सीख का पर्व

गोपाल कौशल भोजवाल

भारत पर्वों का देश है। यहां हर त्योहार अपने साथ कोई न कोई संदेश लेकर आता है। मकर संक्रांति ऐसा ही एक सुंदर पर्व है, जो हर साल जनवरी महीने में मनाया जाता है। यह पर्व हमें प्रकृति, परंपरा और सद्भाव का महत्व समझाता है।मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिन से सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगते हैं, जिसे उत्तरायण कहा जाता है। इसी कारण दिन धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं और ठंड कम होने लगती है। किसान भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत खास होता है, क्योंकि खेतों में नई फसल पककर तैयार होती है। इसलिए मकर संक्रांति को फसल का त्योहार भी कहा जाता है।इस पर्व पर घर-घर में विशेष पकवान बनाए जाते हैं। तिल और गुड़ से बने लड्डू, चिक्की और मिठाइयां बहुत पसंद की जाती हैं। तिल-गुड़ हमें सिखाते हैं कि जैसे ये दोनों अलग-अलग होकर भी मिलकर मीठे बन जाते हैं, वैसे ही हमें भी आपस में मिलजुलकर, मधुर वाणी में रहना चाहिए।मकर संक्रांति की सबसे बड़ी पहचान पतंग उड़ाना है। इस दिन नीला आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाता है। बच्चे छतों पर, मैदानों में बड़े उत्साह से पतंग उड़ाते हैं। ''वो काटा!'' की आवाज़ें वातावरण को आनंद से भर देती हैं। पतंग उड़ाना हमें खुशी तो देता है, लेकिन इसके साथ सावधानी भी बहुत ज़रूरी है।आजकल कुछ लोग खतरनाक चायना डोर का उपयोग करते हैं, जो बहुत नुकसानदायक है। इससे बच्चों के हाथ कट सकते हैं, पक्षी घायल हो जाते हैं और कई बार गंभीर दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं। इसलिए हमें हमेशा सुरक्षित, सूती और देसी डोर का ही उपयोग करना चाहिए। सच्चा उत्सव वही है, जिसमें किसी को चोट न पहुंचे।मकर संक्रांति हमें यह भी सिखाती है कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। सूर्य, धरती, फसल और पशुसब हमारे जीवन का आधार हैं। इस दिन कई स्थानों पर लोग दान-पुण्य करते हैं, जरूरतमंदों की मदद करते हैं और बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। इससे हमारे मन में करुणा और सेवा की भावना बढ़ती है।

मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिन से सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगते हैं, जिसे उत्तरायण कहा जाता है। इसी कारण दिन धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं और ठंड कम होने लगती है। किसान भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत खास होता है, क्योंकि खेतों में नई फसल पककर तैयार होती है। इसलिए मकर संक्रांति को फसल का त्योहार भी कहा जाता है।तिल और गुड़ से बने लड्डू, चिक्की और मिठाइयां बहुत पसंद की जाती हैं।

मकर संक्रांति केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में ले जाने का संदेश है। यह पर्व हमें बताता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर, आलस्य से परिश्रम की ओर और स्वार्थ से सद्भाव की ओर बढ़ना ही सच्ची प्रगति है। बच्चों को चाहिए कि वे इस पर्व को आनंद, सुरक्षा और अच्छे संस्कारों के साथ मनाएं।

मकर संक्रांति केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा में ले जाने का संदेश है। यह पर्व हमें बताता है कि अंधकार से प्रकाश की ओर, आलस्य से परिश्रम की ओर और स्वार्थ से सद्भाव की ओर बढ़ना ही सच्ची प्रगति है। बच्चों को चाहिए कि वे इस पर्व को आनंद, सुरक्षा और अच्छे संस्कारों के साथ मनाएं।

एसआईआर को लेकर सामने आया अजीब मामला

बीएलओ ने पत्नी को भेजा नोटिस

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल राज्य के हुगली जिले के तारकेश्वर में एसआईआर को लेकर एक अजीब मामला सामने आया है। एक बीएलओ ने अपनी पत्नी को ही एसआईआर का नोटिस भेज दिया। नोटिस मिलने के बाद महिला ने चुनाव आयोग के प्रति नाराजगी जाहिर की है। महिला का कहना है कि चुनाव आयोग की लापरवाही के कारण लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।तारकेश्वर नगरपालिका के वार्ड नंबर 1 के बूथ नंबर 248 के बीएलओ राजशेखर मजूमदार ने अपनी पत्नी को एसआईआर का नोटिस भेजा है। नोटिस मिलने पर उनकी पत्नी सुष्मिता मजूमदार ने चुनाव आयोग के प्रति अपना गुस्सा जाहिर किया।सुष्मिता का स्पष्ट कहना है कि यहां मतदान अधिकारियों (बीएलओ) की ओर से कोई लापरवाही नहीं है। चुनाव आयोग की लापरवाही के कारण आम जनता को परेशानी और उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है। सूत्रों के अनुसार सुष्मिता मजूमदार के पिता सुब्रत चटर्जी सेना में कार्यरत थे।उनका नाम 2002 की मतदाता सूची में नहीं था, लेकिन सुष्मिता देवी के दादा भूपेंद्र चटर्जी का नाम 2002 की मतदाता सूची में था। सुष्मिता देवी ने अपने दादा का नाम एसआईआर में दर्ज करवाया, लेकिन उन्हें एक नोटिस भेजा गया, जिसमें उनके दादा से 40 साल का उम्र अंतर दिखाया गया था।इस बीच, दादा भूपेंद्र चटर्जी की उम्र 2002 की सूची में 81 वर्ष बताई गई है। अगर वे आज जीवित होते, तो उनकी उम्र लगभग 105 वर्ष होती। उनका निधन 2010 में हो गया था। वर्तमान में सुष्मिता देवी 37 वर्ष की हैं। इस हिसाब से उम्र का अंतर 65 वर्ष होना चाहिए फिर नोटिस क्यों जारी किया गया? सुष्मिता देवी के परिवार वाले यही सवाल उठा रहे हैं। बीएलओ राजशेखर मजूमदार भी इसे लेकर नाराज हैं। उनका कहना है कि यह गलती तकनीकी गड़बड़ी के कारण हुई है, जिसकी वजह से आम जनता को परेशानी हो रही है।

बीएलओ की रहस्मय मौत, बाथरूम में लटकी मिली लाश

निज संवाददाता : कोलकाता के अहल्यानगर इलाके में एक बड़ा हादसा सामने आया है। 109 नंबर वार्ड के 110 नंबर पार्ट के बीएलओ अशोक दास की रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो गई। उनका शव घर के बाथरूम से लटका हुआ मिला। परिजन उन्हें तुरंत आर.एन. टैगोर अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह आत्महत्या है या किसी अन्य कारण से मौत हुई है, यह पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट होगा। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है।मृतक बीएलओ की पत्नी ने आरोप लगाया है कि अशोक दास को एसआईआर (एसआईआर) से जुड़े काम को लेकर चुनाव आयोग की ओर से लगातार दबाव झेलना पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि घर के पड़ोस से भी उन पर मानसिक दबाव बनाया जा रहा था।अशोक दास की बहन ने बताया कि कुछ दिन पहले भाई ने उन्हें अपनी तबीयत खराब होने की जानकारी दी थी और यह भी कहा था कि काम का बोझ बढ़ता जा रहा है।

हमने युवाओं को दिया खुला आसमान : मोदी

निज संवाददाता : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस और स्टार्टअप इंडिया के 10 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रदर्शनी का निरीक्षण किया। इस दौरान अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि नेशनल स्टार्टअप डे का यह अवसर, स्टार्टअप फाउंडर्स और इनोवेटर्स का यह समूह, मैं अपने सामने नए और विकसित होते भारत का भविष्य देख रहा हूं। उन्होंने कहा कि पहले स्टार्टअप को अक्सर असफलता का रास्ता माना जाता था। आज हम विज्ञान भवन में होने वाली सभाओं से आगे बढ़कर भारत मंडपम में खचाखच भरे हॉल तक पहुंच चुके हैं। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे एक ही सप्ताह में दूसरी बार युवाओं से बातचीत करने का अवसर मिला है।नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज से 10 साल पहले, विज्ञान भवन में 500700 नौजवानों के बीच इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी। उस समय स्टार्टअप की दुनिया में जो नए-नए लोग आ रहे थे, उनके अनुभव मैं सुन रहा था और मुझे याद है एक बेटी, जो कॉरपोरेट वर्ल्ड से

स्टार्टअप इंडिया के 10 वर्ष

अपनी नौकरी छोड़कर स्टार्टअप की तरफ जा रही थी। नौकरी छोड़कर वह कोलकाता अपनी मां से मिलने गई और मां से कहा कि मैंने नौकरी छोड़ दी है और मैं स्टार्ट करना चाहती हूं। फिर उसकी मां ने कहा, सर्वनाश तुम बर्बादी की राह पर क्यों जा रही हो! स्टार्टअप को लेकर यह सोच हमारे देश में थी और आज हम कहां से कहां पहुंच गए, विज्ञान भवन से भारत मंडपम तक, जहां जगह नहीं है।मोदी ने कहा कि हमारे यंग इनोवेटर्स, जिन्होंने नए सपने देखने का साहस दिखाया, मैं उन सभी की बहुत-बहुत सराहना करता हूं। आज हम स्टार्टअप इंडिया के 10 साल पूरे होने का माइलस्टोन सेलिब्रेट कर रहे हैं। 10 साल की ये जर्नी सिर्फ एक सरकारी योजना के सफल होने की कहानी नहीं है, ये आप जैसे हजारों-लाखों सपनों की जर्नी है। ये कितने ही सपनों के साकार होने की यात्रा है। उन्होंने कहा कि आप याद कीजिए, 10 साल पहले हालत क्या थे... इंडिविजुअल एफर्ट और इनोवेशन के लिए गुंजाइश ही नहीं थी। हमने उन परिस्थितियों को चैलेंज किया, हमने स्टार्टअप इंडिया लॉन्च किया और हमने युवाओं को खुला आसमान दिया, और आज नतीजा हमारे सामने है।नरेंद्र मोदी ने कहा कि सिर्फ 10 साल में स्टार्टअप इंडिया मिशन क्रांति बन चुका है। भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। उन्होंने कहा कि भारतीय युवा, वास्तविक समस्याओं के समाधान पर ध्यान दे रहे हैं, स्टार्टअप इंडिया मिशन एक क्रांति बन गया है। उन्होंने कहा कि 10 साल पहले, देश में 500 से भी कम स्टार्टअप थे, आज यह संख्या बढ़कर दो लाख से ज्यादा हो गई है। 2014 में भारत में सिर्फ 4 यूनिकॉर्न थे, आज भारत में करीब सवा सौ सक्रिय यूनिकॉर्न हैं। दुनिया भी आज इस सक्सेस स्टोरी को हैरानी से देख रही है। आने वाले समय में जब भारत की सक्सेस स्टोरी की बात होगी, तब यहां बैठे कितने ही युवा खुद में एक ब्राइट केस स्टडी बनने वाले हैं।

स्वास्थ्य के लिए व्यायाम आवश्यक है, पर विवेक और चिकित्सकीय समझ के साथ

साइक्लिंग किसे वर्जित है और क्यों?

चिकित्सकीय व व्यावहारिक दृष्टि से विस्तृत विवेचना

डॉ. अरविंद सेठ | नीलम सोनी

साइकिल चलाना सामान्यतः सुरक्षित और लाभकारी व्यायाम है, किंतु कुछ विशेष शारीरिक स्थितियों, रोगों और परिस्थितियों में यह वर्जित या सीमित मानी जाती है। ऐसे मामलों में चिकित्सकीय परामर्श आवश्यक होता है।

1. गंभीर हृदय रोगियों के लिएकिन्हें नहीं करना चाहिए?

* हाल ही में हार्ट अटैक हुआ हो
* अनियंत्रित एंजाइना (सीने में दर्द)
* गंभीर हार्ट फेल्योर
* हृदय की धड़कन में गंभीर अनियमितता क्यों वर्जित है?
* साइकिलिंग से हृदय पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है
* ऑक्सीजन की मांग बढ़ जाती है
* अचानक हृदयाघात का खतरानोट : ऐसे रोगी केवल डॉक्टर की अनुमति से हल्की, नियंत्रित साइकिलिंग कर सकते हैं।

2. जोड़ों के गंभीर रोगों मेंकिन्हें नहीं करना चाहिए?

*घुटनों का अत्यधिक ऑस्टियोआर्थराइटिस (ग्रेड 34)
* जोड़ों में तीव्र सूजन या दर्द
* हाल की जॉइंट सर्जरीक्यों वर्जित है?
* पैडल मारने से जोड़ों पर दोहराव वाला दबाव
* सूजन और दर्द बढ़ने की संभावना
* सर्जरी के बाद टांके या इम्प्लांट को नुकसान

3. रीढ़ की हड्डी एवं कमर संबंधी समस्याएंकिन्हें नहीं करना चाहिए?

* स्लिप डिस्क (तीव्र अवस्था)* गंभीर सायटिका* रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर या हाल की सर्जरीक्यों वर्जित है?* झुकी हुई मुद्रा से रीढ़ पर दबाव* नसों पर अतिरिक्त खिंचाव

* दर्द और सुन्नता बढ़ सकती है

4. उच्च रक्तचाप (अनियंत्रित बीपी)किन्हें सावधानी या वर्जना* बीपी लगातार 180/110 मिमीएचजी से अधिकदवाओं से नियंत्रित न हो रहा होक्यों वर्जित है?* तेज साइकिलिंग से बीपी अचानक बढ़ सकता है * स्ट्रोक या हृदयाघात का खतरा

5. गंभीर श्वसन रोगियों के लिएकिन्हें नहीं करना चाहिए?* गंभीर अस्थमा (अनियंत्रित)* सीओपीडी का उन्नत चरण* ऑक्सीजन सपोर्ट पर रहने वाले मरीजक्यों वर्जित है?* सांस फूलना और ऑक्सीजन की कमी* अटैक आने की आशंका

6. गर्भावस्था के विशेष चरणकिन्हें नहीं करना चाहिए? * हाई रिस्क प्रेग्नेंसी * बार-बार चक्कर या गिरने की आशंका* तीसरी तिमाही में असंतुलनक्यों वर्जित है? * गिरने से मां और शिशु को खतरा * पेट पर दबाव पड़ने की संभावनानोट : डॉक्टर की सलाह से स्टेशनरी साइकिल सुरक्षित हो सकती है।

7. न्यूरोलॉजिकल समस्याएंकिन्हें नहीं करना चाहिए? * मिर्गी (अनियंत्रित मिर्गी) * संतुलन विकार (संतुलन विकार) * पार्किंसन का उन्नत चरणक्यों वर्जित है?* गिरने का अत्यधिक जोखिम* अचानक दौरा या असंतुलन

8. हाल की सर्जरी या गंभीर चोटकिन्हें नहीं करना चाहिए? * हाल की पेट, घुटना, कमर या हृदय सर्जरी * फ्रैक्चर या मांसपेशियों की गंभीर चोटक्यों वर्जित है? * टांकों के खुलने का खतरा * घाव भरने की प्रक्रिया में बाधा

9. अत्यधिक मोटापा (गंभीर मोटापा)किन्हें सावधानी चाहिए? * बीएमआई अत्यधिक अधिक हो * घुटनों और कमर में लगातार दर्दक्यों सावधानी आवश्यक? * जोड़ों पर असामान्य दबाव * चोट और थकान की संभावना

10. चक्कर, बेहोशी या दृष्टि समस्याकिन्हें नहीं करना चाहिए? * बार-बार चक्कर आना* दृष्टि धुंधली होना* लो ब्लड शुगर के अटैकक्यों वर्जित है? * सड़क दुर्घटना का खतरा * स्वयं और दूसरों की सुरक्षा पर प्रभावध्यातव्य :साइकिल चलाना अत्यंत लाभकारी है, किंतु हर व्यक्ति के लिए हर परिस्थिति में उपयुक्त नहीं। यदि निम्न लक्षण हों तो साइकिलिंग से पहले डॉक्टर से अवश्य परामर्श लें :* सीने में दर्द * अत्यधिक सांस फूलना * चक्कर या कमजोरी * जोड़ों या कमर में तीव्र दर्द।

लोगों का समर्थन पाने को बेताब माकपा

- शून्य वोट से उबरने के लिए 'श्रोता' बन रहे नेता
- गली-मोहल्लों में चल रही छोटी-छोटी मीटिंग

निज संवाददाता : माकपा फिर से पुराने तरीके से लोगों का समर्थन पाने के लिए बेताब है। अलीमुद्दीन स्ट्रीट (माकपा का प्रदेश मुख्यालय) शून्य वोट से उबरने के लिए नेताओं को सुनने वाले के रोल में ला रहा है। निर्देश दिया जा रहा है कि भाषण देकर नहीं, मोहल्ले में बैठकर लोगों की बात सुननी है। लोगों से उनकी राय लेनी है। इसी के तहत माकपा गली-मोहल्लों में छोटी-छोटी मीटिंग कर रही है। जहां बोलने वाले लोग हैं, वहीं सुनने वाले पार्टी के स्थानीय नेता हैं। माकपा इस महीने ऐसी 25,000 मीटिंग करने की कोशिश कर रही है। दरअसल, बंगाल के लोगों ने 34 साल से सत्ता में काबिज लेफ्ट से मुंह मोड़ लिया है। लोगों को माकपा नेताओं के भाषणों में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसीलिए अलीमुद्दीन ने लोगों के बीच जाकर उनकी बात सुनने का फैसला किया है। 2026 के बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले माकपा की ब्रांच और एरिया कमेटियां ऐसी ही रणनीति के साथ बैलेट बॉक्स पर समर्थन जुटाने निकली हैं। हाल ही में माकपा ने कूचबिहार से उत्तर 24 परगना तक बांग्ला बचाओ यात्रा शुरू की। बांग्ला बचाओ यात्रा में माकपा का मकसद घूम-घूमकर लोगों से मिलना-जुलना था। पब्लिक रिलेशन के साथ-साथ 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले बूथों पर कार्यकर्ताओं और समर्थकों को मजबूत करना था। साथ ही पार्टी को अपने होने का एहसास कराना था। इसी मकसद से 29 नवंबर से शुरू हुई यह यात्रा 17 दिसंबर को कमरहाटी में खत्म हुई, जिसमें स्थानीय से लेकर प्रदेश स्तर तक के अलग-अलग मुद्दों को ध्यान में रखा गया। और फिर माकपा हर मोहल्ले में जाकर लोगों का फीडबैक लेने लगी। मोहल्ला मीटिंग' माकपा का एक पुराना पॉलिटिकल कल्चर है। वाममोर्चा शासन के दौर में माकपा के सबसे पॉपुलर प्रोग्राम में से एक यही पाड़ा बैठक थी। जहां माकपा नेता मोहल्ले-मोहल्ले जाकर पब्लिक रिलेशन करते थे। लीडरशिप मोहल्ले के किसी घर में बैठकर बातचीत करती थी। इसमें मोहल्ले के आम लोग शामिल होते थे। इलाके की क्या समस्याएं हैं? इन समस्याओं को हल करने के क्या तरीके हैं? वहां हर बात पर चर्चा होती थी। एक शब्द में कहें तो इन मीटिंग में करीबी बातचीत होती थी। लेकिन राजपाट जाने के बाद, जनता का सपोर्ट सबसे नीचे था, और ज़मीनी स्तर पर कोई संगठन नहीं था। कार्यकर्ता और समर्थक नहीं दिखते। सत्ता जाने के बाद, यह मोहल्ला मीटिंग कब हुई? यह याद करना मुश्किल है कि यह मीटिंग आखिरी बार कब हुई थी। पार्टी ने आगामी विधानसभा चुनाव से पहले उस प्रोग्राम को शुरू किया था। यह तय हुआ कि (1) 10 से 15 लोग काफी होंगे। एक छोटा डिब्बा हो भी सकता है और नहीं भी। (2) किसी चाय की दुकान के सामने या किसी के आँगन में या गली में इकट्ठा होना। (3) घर-घर जाकर लोगों को पहले से मोहल्ला मीटिंग में आने के लिए बुलाना। (4) उस मीटिंग में पार्टी की लोकल ब्रांच कमेटी से एक-दो जाने-पहचाने चेहरे होंगे। या कहीं एरिया कमेटी से कोई हो सकता है। (5) नेताओं को कोई भी भाषण देने से मना कर दिया गया है। आम लोगों या उस इलाके के रहने वालों का रवैया समझने की ज़रूरत है।

हालांकि, अभी के लिए, माकपा को दस हज़ार जगहों पर इस मोहल्ला मीटिंग को सफल बनाने में मुश्किल हो रही है। क्योंकि संगठन में ज़मीनी स्तर पर उतनी ताकत नहीं है। आम जनता इस मीटिंग में आने के लिए उतनी उत्साहित नहीं है। बस कुछ पुराने समर्थक जो चेहरों को जानते हैं, वही आ रहे हैं। फिर भी, इस मोहल्ले की मीटिंग से लोगों की बात सुनने और माकपा पार्टी के बारे में उनके मौजूदा विचार सुनने के बाद, माकपा ब्रांच कमेटी उस रिपोर्ट को टॉप कमेटी को सौंपेगी। उसे समझते हुए, अगला प्रोग्राम बूथ लेवल पर तय किया जाएगा।

ट्रंप के 'निशाने' पर अब ग्रीनलैंड?

दुनिया के सबसे बड़े द्वीप पर अमेरिकी राष्ट्रपति हर हाल में चाहते हैं कब्जा

ग्रीनलैंड आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक भविष्य-केन्द्रित भूभाग है जहां सैन्य सुरक्षा, संसाधन, समुद्री मार्ग और महान शक्तियों की प्रतिस्पर्धा एक साथ मिलती है। ट्रंप जैसे नेता के लिए यह विचार आकर्षक हो सकता है कि अमेरिका इस द्वीप पर सीधा नियंत्रण या निर्णायक प्रभाव हासिल करे।

निज संवाददाता : अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर मिलिट्री कार्रवाई और राष्ट्रपति मदुरो की गिरफ़्तारी के बीच ग्रीनलैंड की चर्चा शुरू हो गयी है। कहा जाता है कि अब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के निशाने पर ग्रीनलैंड आ गया है। वे उसे हर हाल में अमेरिका के कब्जे में चाहते हैं। वेनेजुएला मसले पर हुई भारी किरकिरी के बाद वे तुरंत ऐसा कुछ करेंगे, शक है लेकिन ट्रम्प कभी भी, कुछ भी करने के आदती हैं, ऐसे में किसी भी संभावना या आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता।

ग्रीनलैंड का नाम आते ही अधिकतर लोगों के दिमाग में बर्फ, ग्लेशियर और बेहद ठंडा इलाका आता है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में ग्रीनलैंड अब सिर्फ बर्फ की चादर नहीं रहा। यह आर्कटिक क्षेत्र का ऐसा भू-भाग है जो आने वाले दशकों में सामरिक,आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से दुनिया के सबसे अहम इलाकों में गिना जा सकता है।

ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है और यह उत्तर अटलांटिक व आर्कटिक के बीच एक तरह से गेटकीपर जैसा स्थान रखता है। अमेरिका की सुरक्षा रणनीति में आर्कटिक लंबे समय से महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि यह क्षेत्र रूस और उत्तरी अमेरिका के बीच सबसे छोटा रास्ता बनाता है। शीतयुद्ध के दौर से ही अमेरिका ने यहां सैन्य और रडार आधारित मौजूदगी बनाए रखी है। ग्रीनलैंड में अमेरिका का थुले (पिटुफिक स्पेस बेस के नाम से चर्चित) क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से मिसाइल-चेतावनी और अंतरिक्ष निगरानी जैसी गतिविधियों से जुड़ा रहा है। आर्कटिक में बढ़ती गतिविधियों के साथ इस तरह के बेस की रणनीतिक कीमत और बढ़ जाती है। अमेरिका के नजरिए से, ग्रीनलैंड पर मजबूत पकड़ का अर्थ है उत्तरी ध्रुव के करीब एक निर्णायक भू-भाग पर प्रभाव। ट्रंप का राजनीतिक और कारोबारी अंदाज अक्सर बड़े, प्रतीकात्मक और हाई-इम्पैक्ट कदमों पर केंद्रित रहा है। ग्रीनलैंड को लेकर सोच के पीछे कुछ प्रेरक कारक इस तरह हो सकते हैं। हालांकि यह कहना भी जरूरी है कि किसी नेता की बयानबाजी और वास्तविक नीति के बीच फर्क हो सकता है; फिर भी ग्रीनलैंड का रणनीतिक आकर्षण वास्तविक है और अमेरिका की लंबे समय की सुरक्षा सोच से मेल खाता है। ग्रीनलैंड की चर्चा अक्सर चीन और रूस की बढ़ती दिलचस्पी के संदर्भ में भी होती है। रूस ने आर्कटिक में अपने सैन्य ढांचे और शिपिंग क्षमता को मजबूत किया है। चीन खुद को निकट-आर्कटिक देश कहकर रिसर्च, निवेश और संभावित शिपिंग रूट्स में रुचि दिखाता रहा है। अमेरिका को चिंता यह रहती है कि आर्कटिक में अगर प्रतिस्पर्धी शक्तियों की आर्थिक/रणनीतिक पैठ बढ़ी, तो भविष्य में समुद्री मार्गों, संसाधनों और निगरानी प्रणालियों पर दबदबा प्रभावित हो सकता है। ग्रीनलैंड इस पूरे समीकरण में एक ऐसा स्थान है जहां से आर्कटिक की गतिविधियों पर नजर भी रखी जा सकती है और जरूरत पड़ने पर रणनीतिक दबाव भी बनाया जा सकता है। ग्रीनलैंड के नीचे खनिज संपदा को लेकर लंबे समय से चर्चाएं हैं। जैसे-जैसे बर्फ पिघलती है और तकनीक विकसित होती है, खनन और संसाधन-निकासी की संभावना बढ़ सकती है। दुनिया आज रेयर अर्थ एलिमेंट्स और महत्वपूर्ण खनिजों के लिए आपूर्ति-श्रृंखलाओं को लेकर बेहद संवेदनशील है क्योंकि ये खनिज इलेक्ट्रिक वाहन, पवन टर्बाइन, मोबाइल, रक्षा उपकरण और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स में काम आते हैं। अमेरिका और उसके सहयोगी चाहते हैं कि इन महत्वपूर्ण खनिजों पर किसी एक देश का एकाधिकार न हो। ग्रीनलैंड में यदि इन संसाधनों का व्यावसायिक दोहन बढ़ता है, तो अमेरिका के लिए यह एक वैकल्पिक और रणनीतिक रूप से सुरक्षित क्षेत्र बन सकता है। ट्रंप की डील और एसेट वाली सोच में ऐसे भूभाग का मूल्य केवल जमीन नहीं, बल्कि भविष्य की सप्लाई-चेन सुरक्षा भी है। जलवायु परिवर्तन के कारण आर्कटिक में समुद्री बर्फ घटने की बात वर्षों से की जा रही है। यदि लंबे समय में समुद्री रास्ते अधिक समय तक खुले रहने लगें, तो उत्तरी शिपिंग रूट्स वैश्विक व्यापार के लिए आकर्षक बन सकते हैं। इससे पारंपरिक रास्तों की तुलना में दूरी और समय घट सकता है। ग्रीनलैंड ऐसे संभावित मार्गों के आसपास एक महत्वपूर्ण बिंदु बन सकता हैजहां बंदरगाह, निगरानी, रेस्क्यू, और सपोर्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर की भूमिका बढ़ सकती है। ग्रीनलैंड को खरीदना या किसी तरह अमेरिका में शामिल करना व्यवहार में अत्यंत कठिन है। संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय कानून इसमें सबसे बड़ी बाधा हैं। ग्रीनलैंड डेनमार्क के भीतर आता है। उसे व्यापक स्वायत्तता प्राप्त है। किसी भी प्रकार के हस्तांतरण के लिए कानूनी-राजनीतिक प्रक्रिया बेहद जटिल होगी। आधुनिक दुनिया में किसी क्षेत्र का हस्तांतरण तभी वैध और टिकाऊ माना जाता है जब स्थानीय जनता की स्पष्ट सहमति हो। ग्रीनलैंड में अपनी पहचान, स्वशासन और भविष्य को लेकर अलग राजनीतिक दृष्टिकोण है। डेनमार्क के लिए ग्रीनलैंड केवल भूभाग नहीं, बल्कि राष्ट्रीय-ऐतिहासिक और रणनीतिक हिस्सा है। इसे छोड़ने की इच्छा लगभग नहीं के बराबर मानी जाती है। डेनमार्क नाटो का सदस्य है। सहयोगियों के साथ रिश्ते बिगाड़कर ऐसा कदम उठाना अमेरिका के लिए कूटनीतिक रूप से महंगा हो सकता है। ग्रीनलैंड का विशाल क्षेत्र, कठोर जलवायु, बुनियादी ढांचे की कमीइन सबका अर्थ है कि प्रशासन, विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा आदि पर भारी खर्च आएगा। ग्रीनलैंड आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक भविष्य-केन्द्रित भूभाग है जहां सैन्य सुरक्षा, संसाधन, समुद्री मार्ग और महान शक्तियों की प्रतिस्पर्धा एक साथ मिलती है। ट्रंप जैसे नेता के लिए यह विचार आकर्षक हो सकता है कि अमेरिका इस द्वीप पर सीधा नियंत्रण या निर्णायक प्रभाव हासिल करे। लेकिन असल दुनिया में संप्रभुता, स्थानीय जनता की इच्छा, डेनमार्क की सहमति, गठबंधन की राजनीति और व्यावहारिक लागत जैसी बाधाएं इसे डील की तरह आसान नहीं रहने देतीं। आर्कटिक के गर्म होते ही ग्रीनलैंड की अहमियत बढ़ेगीचाहे वह अमेरिका के लिए हो, यूरोप के लिए, या चीन-रूस जैसी शक्तियों के लिए। पर इसे हासिल करना एक राजनीतिक कल्पना जितना सरल नहीं, बल्कि कूटनीति, कानून और जनमत की कठिन कसौटी से गुजरने वाला विषय है।

मेरी मां के साथ मेरा रिश्ता बहुत नाजुक था : अरुंधति रॉय

बुकर प्राइज़ विजेता लेखिका ने साझा कीं अपनी मां से जुड़ी यादें

निज संवाददाता : भारत की सबसे पसंदीदा लेखिकाओं में से एक, जिन्हें कुछ लोग उनके खुलकर बोलने के लिए भी टारगेट करते हैं, ने कोलकाता में खचाखच भरे दर्शकों के सामने एक और मज़बूत महिला के बारे में बात की। बुकर प्राइज़ जीतने वाली लेखिका अरुंधति रॉय ने पार्क स्ट्रीट स्थित सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज में एक कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए अपनी यादों की किताब, 'मदर मैरी कम्स टू मी' पर बात की, जिसमें उनकी मां, मैरी रॉय की ज़िंदगी, ''उनकी पनाह और उनके तूफ़ान'' के बारे में भी बताया गया है। इस कार्यक्रम में अरुंधति ने जामिया मिलिया इस्लामिया में प्रोफेसर, निबंधकार, डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर और पुरानी दोस्त शोहिनी घोष के साथ बातचीत की। अरुंधति की मां मैरी रॉय एक फेमिनिस्ट आइकॉन, महिलाओं के अधिकारों की योद्धा और शिक्षिका थीं। जब अरुंधति तीन साल की थीं और उनका भाई चार साल का, तब उन्होंने अपनी शादी तोड़ दी, और 1967 में, उन्होंने केरल के कोट्टायम में एक पुराने रोटरी क्लब हॉल में एक स्कूल शुरू किया। उनकी सबसे यादगार उपलब्धियों में से एक भेदभाव वाले त्रावणकोर क्रिश्चियन सक्सेशन एक्ट को चुनौती देना और सीरियाई ईसाई महिलाओं के लिए विरासत के अधिकार सुरक्षित करने वाला एक अहम सुप्रीम कोर्ट केस जीतना था। सितंबर 2022 में 89 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। अरुंधति ने अपनी मां को एक मुश्किल इंसान बताया। कहा- मेरी मां के साथ मेरा रिश्ता बहुत मुश्किल था, हालांकि मैं उनसे बहुत प्यार करती थी... आप उनके बारे में अपना मन नहीं बना सकते। आप उन्हें पैकेज में नहीं बांध सकते या रिबन में बांधकर यह नहीं कह सकते कि वह यह थीं या वह वह थीं।

लेखिका ने कहा कि अरुंधति के लिए, बचपन का मतलब था कि उनका एक आधा हिस्सा ''हिट झेल रहा था'' और दूसरा आधा ''नोट्स ले रहा था''। मेमोयर का टाइटल मशहूर बीटल्स गाने लेट इट बी से लिया गया है, हालांकि मैरी रॉय ने कभी वे शब्द नहीं कहे। मैरी रॉय ने असम के एक चाय बागान में काम करने वाले एक बंगाली आदमी से शादी की थी। उसकी शराब की लत ने उन्हें उसे छोड़कर अपने बच्चों के साथ दक्षिण में जाने पर मजबूर कर दिया। शोहिनी घोष ने कहा-इस तरह की किताब लिखना प्यार का एक बड़ा काम है, जहां आप किसी को उसकी सारी रोशनी और अंधेरे के साथ गले लगा सकते हैं और प्यार कर सकते हैं। इस मौके पर अरुंधति ने किताब के कुछ हिस्से पढ़े। उसके आखिरी पेज का एक हिस्सा: ''मैं उसे अब भी साफ़ देखती हूं। हर समय। वह ऊंचे समुद्रों पर चल रही है। तूफ़ान और शांति में, धूप और बारिश में। वह तब चल रही है जब लहरें ऊंची होती हैं, वह तब चल रही है जब लहरें नीची होती हैं। वह तब चल रही है जब मैं जागती हूं। और जब मैं सो जाती हूं। वह छोटे, लड़खड़ाते कदम उठाती है, लेकिन चलती रहती है। वह सिर्फ़ गुज़रते हुए जहाज़ों को देखने के लिए रुकती है। या कचरे के छोटे-छोटे महाद्वीपों को देखकर मुंह बनाती है। वह हमेशा अकेली रहती है....''

गौरतलब है कि यह संस्मरण छह दशकों तक फैला है, जिसमें मैरी रॉय को एक योद्धा, शिक्षिका, मां, कमियों वाली इंसान और प्रकृति की शक्ति के रूप में दिखाया गया है।

कोलकाता अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में दुनियाभर के 20 देश हिस्सा लेंगे

22 जनवरी को सीएम ममता बनर्जी करेंगी मेले का आगाज

निज संवाददाता : पब्लशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड की तरफ से आयोजित 49वें अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला का आगाज आगामी 22 जनवरी को शाम 4 बजे बोइमेला प्रांगण (सेंट्रल पार्क), सॉल्टलेक में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा किया जाएगा। पुस्तक मेला के थीम देश अर्जेंटीना के जाने-माने लेखक गुस्तावो कैन्ज़ोब्रे, भारत में अर्जेंटीना के राजदूत मारियानो ऑगस्टिन कॉसिनो इस मौके पर विशेष अतिथि के रूप में लेखकों, गणमान्य व्यक्तियों और राज्य के मंत्रियों के साथ मौजूद रहेंगे। बड़ी बात यह कि दुनिया भर के लगभग 20 देश अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2026 में हिस्सा लेंगे।अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला-2026 की मुख्य बातें इस बार अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला में 1000 से ज़्यादा प्रतिभागी होंगे। सीनियर सिटीज़न डे, चिरो तरुण 30 जनवरी को मनाया जाएगा। चिल्ड्रन्स डे 1 फरवरी 2026 को मनाया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला में नौ एंट्री (प्रवेश) और एग्जिट (निकासी) गेट होंगे। दो गेट अर्जेंटीना की वास्तुकला पर आधारित होंगे। हाल ही में दिवंगत प्रफुल्ल रॉय व प्रतुल मुखोपाध्याय के नाम पर गेट होंगे। शैलजानंद मुखोपाध्याय के 125वें जन्म वर्ष को मनाने के लिए, एक और गेट का नाम उनके नाम पर रखा जाएगा। लिटिल मैगज़ीन (लघु पत्रिका) पवेलियन का नाम कवि राहुल पुरकायस्थ के नाम पर रखा जाएगा। मयूख चौधरी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए मयूख चौधरी चिल्ड्रन्स पवेलियन होगा। महान संगीतकार सलिल चौधरी, डॉ. भूपेन हज़ारिका की जन्म शताब्दी वर्ष को अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला में क्रमशः 26 और 27 जनवरी को सांस्कृतिक कार्यक्रम और पैनल चर्चा द्वारा मनाया जाएगा। पहली बार पुस्तक मेला का आयोजन स्थल हावड़ा से करणामयी और एस्प्लेनेड के रास्ते सेंट्रल पार्क तक मेट्रो से सीधे जुड़ा होगा। इस तरह कोलकाता, हावड़ा और अन्य जिलों से बड़ी संख्या में पुस्तक प्रेमी पुस्तक मेला स्थल तक पहुंचने के लिए मेट्रो का उपयोग करेंगे। पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड के अनुरोध पर मेट्रो रेलवे अधिकारियों ने मेट्रो सेवा की फ्रीक्वेंसी बढ़ाने का फैसला किया है। मेला के दिनों में रात 10 बजे के आसपास आखिरी मेट्रो उपलब्ध होगी। पुस्तक मेला के प्रांगण में एक विशेष बूथ भी होगा, जहां से आगंतुक यूपाई द्वारा टिकट बुक कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2026 का एंड्रॉइड ऐप सिस्टर निवेदिता यूनिवर्सिटी द्वारा बनाया गया है जो गूगल लोकेशन का इस्तेमाल करके मेले में किसी भी स्टॉल का पता लगाने में मदद करेगा। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला की वेबसाइट और सोशल मीडिया पेजों के ज़रिए वर्चुअल लाइव मौजूदगी भी होगी। सिस्टर निवेदिता यूनिवर्सिटी पुस्तक मेला की डिजिटल पार्टनर है।अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला की पार्टिसिपेंट लिस्ट वाला डिजिटल ग्राउंड मैप बुक फेयर के सभी एंट्री पॉइंट्स पर क्यूआर कोड स्कैन करके उपलब्ध होगा। कोलकाता साहित्य उत्सवअंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला का मुख्य आकर्षण, जिसका सभी इंतज़ार कर रहे हैं, कोलकाता लिटरेचर फेस्टिवल (कोलकाता साहित्य उत्सव) का 12वां एडिशन होगा, जो 24 और 25 जनवरी 2026 को एसबीआई ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा।

महान समाज सुधारक महादेव गोविंद रानाडे

पुण्य तिथि पर विशेष

निज संवाददाता : भारत की स्वतंत्रता के लिए न जाने कितने ही लोगों ने अपना बलिदान दिया है। ऐसे ही एक समाज सुधारकों में से एक महादेव गोविंद रानाडे का नाम भी शामिल है। आज ही के दिन यानी की 16 जनवरी को महादेव गोविंद रानाडे का निधन हो गया था। उन्होंने समाज सुधार के लिए कई काम किए हैं। महादेव गोविंद रानाडे को जस्टिस रानाडे के नाम से भी जाना जाता है। महादेव गोविंद रानाडे समाज सुधारक और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। महाराष्ट्र के नासिक जिले में 18 जनवरी 1842 को महादेव गोविंद रानाडे का जन्म हुआ था। उनका बचपन कोल्हापुर में बीता था। उनकी शुरूआती शिक्षा कोल्हापुर के मराठी स्कूल से की थी। वहीं 14 साल की उम्र में वह बंबई आ गए। यहां पर उन्होंने एलफिंस्टन कॉलेज से हायर एजुकेशन पूरा किया। वह गोविंद बंबई यूनिवर्सिटी के फर्स्ट बैच के छात्र थे। साल 1962 में महादेव गोविंद रानाडे ने बीए किया और फिर एलएलबी की डिग्री फर्स्ट डिवीजन में हासिल की।रानाडे ने भारतीय भाषाओं को बंबई यूनिवर्सिटी के सिलेबस में शामिल किया। उनकी योग्यता की वजह से उनको बॉम्बे स्मॉल कॉज कोर्ट में प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया था। फिर साल 1893 तक वह बॉम्बे हाईकोर्ट के जज नियुक्त किए गए थे।वहीं एलफिंस्टन कॉलेज में गोविंद रानाडे को इतिहास के ट्रेनर के रूप में नियुक्त किया गया था। जिसकी वजह से उनमें भारतीय इतिहास विशेषरूप से मराठा इतिहास में विशेष रुचि विकसित हुई। इसी के चलते रानाडे ने साल 1900 में राइज ऑफ मराठा पावर नाम की पुस्तक लिखी थी। इतिहास में विशेषज्ञता के कारण रानाडे हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि भारतीयों में इतिहास के प्रति संवेदनशीलता की काफी कमी है।महादेव गोविंद रानाडे का झुकाव हिंदू धर्म के आध्यात्मिक पक्ष की तरफ ज्यादा था। वह मूर्ति पूजा और कर्म-कांडों में विश्वास नहीं रखते थे। रानाडे धर्म से लेकर शिक्षा तक भारतीयों में प्रगतिशील सुधार देखना चाहते थे। रानाडे ने बाल विवाह, ट्रांस-समुद्री यात्रा पर जाति प्रतिबंध, शादी धूमधाम से करने और विधवा मुंडन जैसी तमाम बुराइयों का जमकर विरोध किया था। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और स्त्री शिक्षा पर विशेष कार्य करते हुए महाराष्ट्र कन्या शिक्षा समाज की स्थापना की थी।बता दें कि रानाडे ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का समर्थन किया था। साल 1885 में उन्होंने कांग्रेस के प्रथम मुंबई अधिवेशन में भाग लिया। राजनीतिक सम्मेलनों के साथ सामाजिक सम्मेलनों के आयोजन का श्रेय रानाडे को जाना है। वह सिर्फ सामाजिक सुधार के लिए पुरानी रुढ़ियों को तोड़ना काफी नहीं मानते थे। उनका कहना था कि रचनात्मक कार्य से ही यह संभव हो सकता है।वहीं 16 जनवरी 1901 को महादेव गोविंद रानाडे का पुणे में निधन हो गया था।आज ही के दिन 16 जनवरी 1901 को समाज सुधारक और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक महादेव गोविंद रानाडे का पुणे में निधन हो गया।

अजब-गजब

तक्षशिला के पास चल रही खुदाई में पुरातत्वविदों को मिली बड़ी कामयाबी

दुर्लभ सजावटी पत्थर और प्राचीन सिक्के मिले

निज संवाददाता : पाकिस्तान में ऐतिहासिक शहर तक्षशिला के पास चल रही खुदाई में पुरातत्वविदों को बड़ी कामयाबी मिली है। यूनेस्को हेरिटेज साइट भीर टीले पर उत्खनन के दौरान दुर्लभ सजावटी पत्थर और प्राचीन सिक्के मिले हैं, जो क्षेत्र की सबसे शुरुआती शहरी सभ्यता को दिखाते है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह खोज प्राचीन सभ्यता को समझने में एक अहम कड़ी साबित होगी। रिपोर्ट के मुताबिक, अधिकारियों ने बीते पिछले एक दशक में इस स्थल पर हुई सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक बताया है।

पुरातात्विक महत्व की ये वस्तुएं प्राचीन भीर टीले पर मिली हैं। विशेषज्ञों ने ईसा पूर्व छठी शताब्दी के सजावटी पत्थर और दूसरी शताब्दी के सिक्के बरामद किए। रिपोर्ट में कहा गया कि विशेषज्ञों ने सजावटी पत्थरों के टुकड़े बरामद किए जिनकी पहचान 'लैपिस लाजुली' के रूप में की गई है और इसके साथ ही कुषाण वंश से संबंधित दुर्लभ कांस्य सिक्के भी मिले हैं, जिससे प्राचीन गांधार के भौतिक इतिहास को एक नया आयाम मिला है। पंजाब पुरातत्व विभाग के उप निदेशक आसिम डोगर ने कलाकृतियों के प्रारंभिक विश्लेषण की पुष्टि की। डोगर ने कहा-सजावटी पत्थर लैपिस लाजुली हैं जो एक बहुमूल्य पत्थर है, जबकि सिक्के कुषाण काल के हैं। खुदाई करने वाली टीम ने धातु की कलाकृतियों की आयु निर्धारित करने के लिए विशेष फॉरेंसिक सहायता ली। डोगर ने बताया कि पेशावर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों की ओर से किए गए विस्तृत मुद्रा विश्लेषण से पुष्टि हुई है कि सिक्कों पर सम्राट वासुदेव की छवि अंकित है। इतिहासकार वासुदेव को इस क्षेत्र पर शासन करने वाले अंतिम 'कुषाण शासक' मानते हैं।

क्या था तक्षशिला?

डोगर ने कहा कि आसपास के पुरातात्विक साक्ष्यों से साफ होता है कि ये अवशेष आवासीय क्षेत्र थे। ये नवीनतम खोजें इसकी पुष्टि करती हैं कि कुषाण शासन के दौरान तक्षशिला अपने राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव के चरम पर था। डोगर ने कहा-कनिष्क जैसे सम्राटों के शासनकाल में तक्षशिला एक प्रमुख प्रशासनिक, वाणिज्यिक और बौद्धिक केंद्र के रूप में उभरा। उन्होंने कहा कि इस युग में बौद्ध धर्म को कुषाण काल का व्यापक संरक्षण मिलने के कारण स्तूपों, मठों और विशाल धार्मिक परिसरों का निर्माण हुआ।

डॉक्टरों ने की अनोखी सर्जरी

महिला का फटा कान पहले लगाया पैर पर, फिर सिर पर रीअटैच कर दिया

निज संवाददाता : पडोसी देश चीन के डॉक्टरों ने दुनिया की अनोखी सर्जरी करने का कारनामा कर दिया है। यहां के डॉक्टरों ने ऑपरेशन में एक महिला का फटा हुआ कान अस्थायी रूप से उसके पैर पर लगाया गया और बाद में उसे फिर से सिर पर रीअटैच कर दिया गया। दरअसल, महिला के साथ कार्यस्थल पर एक भयानक हादसे में भारी मशीनरी ने उसके कान के साथ सिर की बड़ी हिस्से की त्वचा को भी फाड़ दिया था। रिपोर्ट के मुताबिक, महिला की खोपड़ी, गर्दन और चेहरे की त्वचा कई टुकड़ों में बंट गई थी और कान पूरी तरह से अलग हो गया था। हालांकि इलाज के लिए महिला को तुरंत अस्पताल लाया गया। ऐसे में डॉक्टरों ने पारंपरिक सर्जरी से ही सिर की त्वचा को जोड़ने की कोशिश की, लेकिन खोपड़ी के ऊतक और रक्त वाहिकाओं को हुए गंभीर नुकसान के कारण यह कोशिश नाकाम रही। सिर की त्वचा को ठीक होने में समय लगना था, डॉक्टरों ने कान को रखने के लिए एक अनोखा तरीका अपनाया। उन्होंने कान को महिला के पैर पर ग्राफ्ट कर दिया। डॉक्टरों के अनुसार, पैर की धमनियां और नसें कान के लिए उपयुक्त थीं और त्वचा की मोटाई भी सिर जैसी थी। यह प्रक्रिया बेहद चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि कान की नसें बेहद पतली थीं। सिर्फ 0.2 से 0.3 मिलीमीटर, ये ऑपरेशन लगभग 10 घंटे चला। पांच दिन बाद एक बड़ी समस्या आई। रक्त प्रवाह बाधित हो गया और कान का रंग बैंगनी-काला हो गया। इसे बचाने के लिए डॉक्टरों ने पांच दिनों में लगभग 500 बार मैनुअल ब्लडलेटिंग की। इस बीच महिला की खोपड़ी को पेट की त्वचा से ग्राफ्ट करके ठीक किया गया।

विज्ञान

लाश से कोड तक : कोलकाता और भारत में एनाटॉमी शिक्षा का 190 साल लंबा सफर

कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में मधुसूदन गुप्ता पर एक पट्टिका

निज संवाददाता : 10 जनवरी, 1836 को कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के अंदर एक क्रांतिकारी घटना हुई, जिसने इतिहास रच दिया और भारतीय चिकित्सा और हेल्थकेयर का चेहरा बदल दिया। मधुसूदन गुप्ता ने एशिया में पहली बार इंसानी लाश का चीर-फाड़ किया, जिससे गहरी धार्मिक मान्यताओं और ज़बरदस्त सामाजिक विरोध को चुनौती मिली। उस समय, रूढ़िवादी मान्यताओं के अनुसार, मृत शरीर को छूना एक पाप माना जाता था, और चीर-फाड़ को अपवित्र काम समझा जाता था। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ मेडिसिन द्वारा डॉक्यूमेंट किए गए रिकॉर्ड के अनुसार, गुप्ता के फैसले ने थ्योरी वाली पढ़ाई से प्रैक्टिकल मेडिकल एजुकेशन की ओर एक बड़ा बदलाव किया और भारत में मॉडर्न एनाटॉमी टीचिंग की नींव रखी। इतिहासकार बताते हैं कि यह विरोध सिर्फ़ धार्मिक नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और राजनीतिक भी था, जिसमें औपनिवेशिक चिकित्सा पद्धति पर भी सवाल उठाए जा रहे थे। फिर भी, इस कोशिश की सफलता ने पूरे देश में मेडिकल करिकुलम में शवों की चीर-फाड़ को ज़रूरी बना दिया, एक ऐसा बदलाव जिसने यह बदल दिया कि डॉक्टरों की आने वाली पीढ़ियां इंसानी शरीर के बारे में कैसे सीखेंगी। दशकों तक, शवों की चीर-फाड़ ज़्यादातर पहले और दूसरे साल के मेडिकल स्टूडेंट्स तक ही सीमित थी। रामदीप रे, जो कोलकाता के अपोलो मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल में लिवर ट्रांसप्लांट के हेड और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जरी में सीनियर कंसल्टेंट हैं और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के पूर्व छात्र हैं, जिन्होंने बाद में आईपीजीएमईआर और सीएमएस में ट्रेनिंग ली, याद करते हैं कि वह अनुभव कितना महत्वपूर्ण था। उन्होंने बताया कि 1990 के दशक में एक मेडिकल स्टूडेंट के तौर पर,''लाशें हमारी पहली खामोश टीचर थीं। अक्सर बिना दस्तानों के डिसेक्शन करते हुए, हमें सिर्फ़ एनाटॉमी ही नहीं, बल्कि सहनशक्ति और सेंसरी जागरूकता भी सिखाई जाती थी। फॉर्मेल्डिहाइड की गंध, टिशू का रेजिस्टेंस और खून और शरीर के तरल पदार्थों की सच्चाई ने स्टूडेंट्स को सर्जरी की कम सुखद सच्चाइयों के लिए तैयार किया।'' रे के अनुसार, टेक्नोलॉजी के ऑपरेशन थिएटर में आने से बहुत पहले ही लाशों ने हाथों और दिमाग को ट्रेनिंग दी थी। समय के साथ, शवों पर आधारित पढ़ाई अंडरग्रेजुएट क्लासरूम से आगे बढ़ गई। आज, यह एडवांस्ड सर्जिकल ट्रेनिंग में एक ज़रूरी भूमिका निभाती है। रे ने समझाया-अब शवों का इस्तेमाल पहले से क्वालिफाइड सर्जनों के लिए स्पेशलाइज्ड वर्कशॉप में किया जाता है, खासकर लिवर ट्रांसप्लांट, जटिल कैंसर सर्जरी, मिनिमली इनवेसिव प्रोसीजर और रोबोटिक सर्जरी के लिए। इस स्टेज में, शव थ्योरेटिकल ज्ञान और मरीज़ की सुरक्षा के बीच एक पुल का काम करते हैं, जिससे सर्जन जीवित मरीज़ों पर सर्जरी करने से पहले तकनीकों का अभ्यास कर पाते हैं। यह बदलाव मेडिकल शिक्षा में एक बड़े बदलाव को दिखाता है, जो रटने वाली एनाटॉमी याद करने से लेकर व्यावहारिक, स्किल-बेस्ड सीखने की ओर है, यह बदलाव आज के एकेडमिक लिटरेचर में भी देखा गया है। फोर्टिस हॉस्पिटल, आनंदपुर में रोबोटिक्स और जीआई सर्जरी के डायरेक्टर और 1990 के दशक के बीच के कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के पासआउट उद्दीप्त रे का मानना है कि एनाटॉमी हॉल में एक और बदलाव हो रहा है।

वह बताते हैं-मॉडर्न प्रिजर्वेशन टेक्नीक अब टिशूज़ को ज़्यादा साफ़ देखने की सुविधा देती हैं, जबकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी टूल्स यह तय कर रहे हैं कि स्टूडेंट्स एनाटॉमी को कैसे समझते हैं। उनके अनुसार,''वर्चुअल डिसेक्शन और 3डी मॉडल स्टूडेंट्स को ब्रेन और वैस्कुलर नेटवर्क जैसी जटिल संरचनाओं को डिसेक्शन हॉल में जाने से पहले ही समझने में मदद करते हैं। ये टूल्स पर्सनलाइज़्ड लर्निंग की सुविधा देते हैं, यह पहचानते हैं कि स्टूडेंट को कहाँ मुश्किल हो रही है और विज़ुअल स्पष्टीकरण देते हैं। ये उन स्टूडेंट्स के लिए एक विकल्प भी प्रदान करते हैं जिन्हें फॉर्मेल्डिहाइड के लंबे समय तक संपर्क में रहना मुश्किल लगता है। हालांकि, रे को भरोसा है कि टेक्नोलॉजी टच की जगह नहीं ले सकती। एआई संरचनाएं दिखा सकता है, लेकिन यह टिशू की फील या स्थानिक प्रतिरोध को फिर से नहीं बना सकता। उनका मानना है कि भविष्य पारंपरिक कैडेवरिक डिसेक्शन को डिजिटल टूल्स के साथ मिलाकर ज़्यादा संपूर्ण सीखने के अनुभव में है। मधुसूदन गुप्ता के विरोध के लगभग 190 साल बाद भी, यह सबक आज भी प्रासंगिक है। टेक्नोलॉजी ने एनाटॉमी पढ़ाने का तरीका बदल दिया है, लेकिन इंसान का शरीर आज भी सबसे प्रामाणिक टेक्स्टबुक है। जैसे-जैसे मेडिकल एजुकेशन शव से कोड की ओर बढ़ रही है, कोलकाता के एनाटॉमी हॉल में आज भी 1836 की विरासत की गूंज सुनाई देती है, जो छात्रों को याद दिलाती है कि इनोवेशन इतिहास के कंधों पर ही सबसे मजबूत होता है।

नास्त्रेदमस और बाबा वेंगा की भविष्यवाणी सही निकली?

2026 में वैश्विक स्तर पर बड़े युद्ध और हिंसा की दी गई थी चेतावनी

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमला

निज संवाददाता : वेनेजुएला की राजधानी काराकस में लोग गहरी नींद में सो रहे थे, अचानक कुछ तेज धमाकों की आवाज से सब चौंक गए। आसमान से हमले शुरू हो गए और सड़कों पर अफरा-तफरी मच गई। अमेरिका ने वेनेजुएला पर हमला कर दिया। इस हमले में अमेरिकी सैनिकों ने राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस को हिरासत में ले लिया। इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर नास्त्रेदमस और बाबा वेंगा की भविष्यवाणी की फिर चर्चा होने लगी। दोनों भविष्यवक्ताओं ने 2026 में वैश्विक स्तर पर बड़े युद्ध और हिंसा की चेतावनी दी थी। नास्त्रेदमस ने भविष्यवाणी की थी कि 2026 दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध की ओर ले जा सकता है। उनकी भविष्यवाणी में कहा गया है कि धर्म और राष्ट्रवाद के नाम पर हिंसा बढ़ेगी, इंसान ही इंसान का दुश्मन बनेगा और यह टकराव पूरी दुनिया को तबाही की ओर ले जा सकता है। वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले जैसी रात में अचानक होने वाली कार्रवाई को नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी से जोड़कर देखा जा रहा है। उनकी भविष्यवाणी में 'मधुमक्खियों के झुंड' शब्द का उल्लेख है, जिसे लेकर विशेषज्ञों का कहना है कि योजनाबद्ध और अचानक हमले के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है। नास्त्रेदमस के मुताबिक समुद्री मार्गों और बंदरगाहों पर युद्ध या तनाव के कारण अनाज और अन्य जरूरी सामान की आपूर्ति में कमी हो सकती है। इसका असर वैश्विक कीमतों और राजनीतिक संतुलन पर भी पड़ेगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बाबा वेंगा ने भी 2026 को लेकर चेतावनी दी थी। उनके मुताबिक पूर्वी देशों में बढ़ते तनाव से वैश्विक युद्ध का खतरा है, जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। बाबा वेंगा ने कहा था कि चीन, रूस और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देशों के बीच टकराव की स्थिति बन सकती है। इसमें ताइवान पर चीन की संभावित कार्रवाई और रूस व अमेरिका के बीच सीधे टकराव का जिक्र भी शामिल है। इसके परिणामस्वरूप वैश्विक शक्ति संतुलन बदल सकता है और जान-माल की बड़ी हानि हो सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने रात के अंधेरे में वेनेजुएला की राजधानी काराकस पर सीक्रेट मिलिट्री अट्रैक किया। अमेरिकी सैनिक मादुरो और उनकी पत्नी को उनके बेडरूम से बाहर खींचकर लाए। यह कार्रवाई भी नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी में बताए गए रात के अचानक हमले से मेल खाती है। सोशल मीडिया पर लोग सवाल कर रहे हैं कि क्या वेनेजुएला पर अमेरिकी हमला 2026 के वैश्विक युद्ध की शुरुआत है। नास्त्रेदमस और बाबा वेंगा की भविष्यवाणी अब चर्चा में है।

भारतीय फुटबॉल में खुशखबरी

एशियाई फुटबॉल परिसंघ ने संक्षिप्त आईएसएल को दी मान्यता

निज संवाददाता : आगामी महीने की 14 तारीख से आईएसएल शुरू होने की संभावना है। हालांकि, इस बार देश की शीर्ष लीग संक्षिप्त प्रारूप में आयोजित होगी। मुकाबले 'स्विस मॉडल' में खेले जाएंगे। प्रत्येक टीम हर दूसरी टीम के खिलाफ एक-एक मैच खेलेगी। लीग शुरू होने से पहले ही एक बड़ी खुशखबरी सामने आई हैफेडरेशन के अनुरोध को स्वीकार करते हुए एशियाई फुटबॉल परिसंघ (एएफसी) ने संक्षिप्त प्रारूप वाली आईएसएल को मान्यता दे दी है।

आईएसएल को मान्यता देने के मुद्दे पर अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने पहले ही एशियाई नियामक संस्था को सूचित किया था। फेडरेशन ने 'विशेष परिस्थितियों' का हवाला देते हुए आग्रह किया था कि आईएसएल के संक्षिप्त प्रारूप को भी मान्यता दी जाए। अंततः गुरुवार को एएफसी ने एक पत्र के माध्यम से सूचित किया कि उसने एआईएफएफ के आवेदन को मंजूरी दे दी है। इसका अर्थ है कि अब आईएसएल विजेता और सुपर कप विजेता को एएफसी स्लॉट मिलने में कोई बाधा नहीं रहेगी। हालांकि, इन दोनों प्रतियोगिताओं की चैंपियन टीमों को एएफसी के मुख्य दौर में पहुंचने के लिए क्वालिफायर खेलना होगा। पहले आईएसएल लीग शील्ड विजेता टीम को सीधे मुख्य दौर में खेलने की अनुमति मिलती थी, लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा।

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक क्लब कुछ घरेलू (होम) और कुछ बाहरी (अवे) मैच खेलेगा। क्लब स्वयं तय करेंगे कि वे कौन से मैच होम और कौन से अवे खेलना चाहते हैं। 14 टीमों के साथ आईएसएल शुरू होने जा रही है, हालांकि कई चीजों में कटौती की गई है। कुल 91 मैच खेले जाएंगे। गुरुवार को दिल्ली में आयोजित एआईएफएफ की वार्षिक आम बैठक में एएफसी के प्रतिनिधि उपस्थित थे। सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद एएफसी की यह मान्यता भारतीय फुटबॉल के लिए निस्संदेह एक बड़ी खुशखबरी है। इससे क्लबों को भी लाभ होगा, क्योंकि एएफसी की मान्यता मिलने से अब एएफसी क्लब प्रतियोगिताओं में भाग लेने के मार्ग में कोई बाधा नहीं रहेगी।

एसआईआर को लेकर चाकुलिया में बीडीओ दफ्तर में लगाई आग

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) को लेकर हो रहा विरोध अब हिंसक होता जा रहा है। मुर्शिदाबाद जिले के फरक्का के बाद उत्तर दिनाजपुर जिले के चाकुलिया में गुरुवार को एसआईआर के विरोध में चाकुलिया में बीडीओ ऑफिस में तोड़फोड़ की गई। आगजनी की गई। प्रदर्शनकारियों को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा और आंसू गैस के गोले दागने पड़े। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, कुछ लोगों ने स्टेट हाईवे जाम कर विरोध किया। यह सब उन लोगों ने किया, जिन्हें एसआईआर सुनवाई के लिए बुलाया गया था।दूसरी ओर, चुनाव आयोग ने इस घटना पर सख्त रुख अपनाया है। चुनाव आयोग ने उत्तर दिनाजपुर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट इलेक्शन ऑफिसर (डीईओ) को प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया है।पुलिस सूत्रों के मुताबिक, एसआईआर सुनवाई के लिए जिन लोगों को बुलाया गया था, गुरुवार सुबह चाकुलिया के कहाटा इलाके में कुछ लोगों ने स्टेट हाईवे जाम कर दिया। इस वजह से ट्रैफिक जाम हो गया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों पर बीडीओ ऑफिस में तोड़फोड़ के आरोप लगे और बीडीओ ऑफिस में आग लगा दी गई।ऑफिस के अंदर फर्नीचर से लेकर सब कुछ जलकर खाक हो गया। बीच सड़क पर भी आग जलाकर प्रदर्शन किया गया. कई लोग बांस लेकर सड़कों पर उतर आए हैं।सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। वहां स्थिति को काबू में किया गया। पुलिस लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोले दागकर हालात पर नियंत्रण लाई। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि इस्लामपुर पुलिस जिले को हाई अलर्ट पर रखा गया है।इससे पहले बुधवार को फरक्का, मुर्शिदाबाद में विरोध प्रदर्शन की तस्वीरें देखी गई थी। गुरुवार को चाकुलिया में इस एक ही तरह की घटना घटी।

गोयनका मंदिर कोलकाता में मकर संक्रांति उत्सव

14 जनवरी 2026 बुधवार को मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर गोयनका मंदिर कोलकाता में अपनी कुलदेवी श्री बीरां बरजी दादी का पतंग एवं फूलों से अद्भुत शृंगार किया गया । इस अवसर पर गोयनका परिवार के अनेक सदस्यों द्वारा अपनी कुलदेवी का दर्शन किया तथा घेवर एवं तिल की गजक का प्रसाद प्राप्त किया।

अमेलिया वालवर्डे भारत की महिला फुटबॉल टीम की मुख्य कोच नियुक्त

शुभ्रांशु राय

देश में महिला फुटबॉल को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने अमेलिया वालवर्डे को भारतीय महिला राष्ट्रीय फुटबॉल टीम की नई मुख्य कोच नियुक्त किया है। यह नियुक्ति ब्लू टाइग्रेसिज़ के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत मानी जा रही है, क्योंकि टीम अब महाद्वीपीय प्रतियोगिताओं और दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों से भरे एक अहम चरण की तैयारी कर रही है।कोस्टा रिका की अनुभवी कोच अमेलिया वालवर्डे अपने साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर का व्यापक अनुभव लेकर आई हैं। वह विशेष रूप से 2015 और 2023 फीफा महिला विश्व कप में कोस्टा रिका की महिला टीम का नेतृत्व करने के लिए जानी जाती हैं। उनके मार्गदर्शन में कोस्टा रिका मध्य अमेरिकी महिला फुटबॉल में एक प्रतिस्पर्धी शक्ति के रूप में उभरा और सामरिक अनुशासन, टीम समन्वय तथा मजबूत प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ जुझारूपन के लिए सराहा गया।

नियुक्ति की घोषणा करते हुए एआईएफएफ ने विश्वास जताया कि वालवर्डे का वैश्विक अनुभव और शीर्ष स्तर पर उनका सिद्ध रिकॉर्ड भारतीय महिला फुटबॉल को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में मदद करेगा। विश्व कप अभियानों के प्रबंधन का उनका अनुभव भारत के लिए खास तौर पर उपयोगी माना जा रहा है, क्योंकि टीम अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग सुधारने और एशियाई स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी टीम बनाने का लक्ष्य रखती है।

अमेलिया वालवर्डे संरचित खेल शैली, खिलाड़ी विकास और मजबूत रक्षात्मक संगठन पर विशेष जोर देने के लिए जानी जाती हैं, साथ ही वह तेज़ ट्रांज़िशन गेम में भी विश्वास रखती हैं। उनकी कोचिंग दर्शन एआईएफएफ के उस दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य जमीनी स्तर से लेकर शीर्ष स्तर तक महिला फुटबॉलरों के लिए एक स्थायी विकास मार्ग तैयार करना है।अपनी नियुक्ति के बाद बोलते हुए वालवर्डे ने कहा कि इस जिम्मेदारी को संभालना उनके लिए सम्मान की बात है और वह भारतीय महिला फुटबॉलरों की क्षमता को लेकर बेहद उत्साहित हैं। उन्होंने एशिया की शीर्ष टीमों के साथ अंतर को पाटने के लिए दीर्घकालिक योजना, फिटनेस और सामरिक समझ के महत्व पर जोर दिया। अमेलिया वालवर्डे के नेतृत्व में यह उम्मीद की जा रही है कि भारतीय महिला टीम को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अधिक पहचान, पेशेवर दृष्टिकोण और निरंतरता मिलेगी। उनका कार्यकाल बारीकी से देखा जाएगा, क्योंकि भारत अब संभावनाओं को ठोस प्रदर्शन और नतीजों में बदलने की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है।

जैसलमेर में लें दुबई जैसा मजा

निज संवाददाता : इस समय बंगाल समेत भारत के कई राज्यों में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। सर्दियों के सीजन में लोग ऐसी जगहें घूमने का प्लान करते हैं, जहां गुनगुनी धूप के साथ एडवेंचर एक्टीविटी का भी मजा मिले। इसके लिए आप राजस्थान के गोल्डन सिटी में घूमने का प्लान बनाएं। जैसलमेर सर्दियों में घूमने क लिए सबसे बेस्ट जगहों में से एक है। यहां पर आपको दुबई वाली फीलिंग मिलने वाली है क्योंकि डेजर्ट सफारी का भी मजा एक अलग ही होता है। इसके साथ ही रेत के मैदान में मिलने वाले शानदार नजारे भी नजर आएंगे। रात को आप साफ-सुथरे आसमान के बीच टिमटिमाते तारों के अलावा दूरबीन की मदद से आसमान को भी निहारने का मौका पा सकते हैं। दिल्ली से जैसलमेर की ट्रिप का प्लान करना भी काफी आसान होता है। यहां पर घूमने-फिरने के साथ खाने के भी ऑप्शन मिलेंगे और आप दो रात तीन दिन में जैसलमेर के खूबसूरत नजारों को लेकर वापस भी लौट सकते हैं। यदि आप भी घूमने का प्लान बना रही हैं, तो जैसलमेर बेस्ट डेस्टिनेशन हो सकती है।यदि आप सेफ्टी के साथ ही बजट में ट्रैवल करना चाहते हैं, तो ट्रेन का

ऑप्शन बेस्ट है। खासतौर पर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से कई ट्रेने हैं, जो जैसलमेर के लिए चलती हैं। करीब 15 घंटे के रास्ते को नापकर आप राजस्थान के इस शहर में पहुंच सकते हैं। शाम के 6 बजे के करीब चलने वाली ट्रेन जैसलमेर सुबह 9 बजे आराम से पहुंचा देती है। इस बात का ध्यान रखें कि अगर आप ट्रेन से ट्रैवल करना चाहते हैं, तो टिकट को पहले ही बुक कर लें। आप चाहे तो फ्लाइट से भी सफर कर सकते हैं। जैसलमेर एयरपोर्ट पहुंचकर, अपनी ट्रिप को एन्जॉय करें।जैसलमेर का सोनार किला दूर से ही दिखाई देता है। गोल्डन रंग के इस किले में अंदर पतली कतरफुल गलियां, हवेलियां, तोपें, मंदिर और म्यूजियम भी है। ये किला अंदर से किसी छोटे शहर जैसा है जिसमें अभी भी लोग रहते हैं।अगर आप भी रेगिस्तान को ओरिजनली देखना चाहते हैं तो यहां पर जरुर जाएं। लेकिन ये जगह जैसलमेर से 40 किमी दूर है। यहां पर जाने के लिए आपको प्राइवेटस लोकल कैब या टैक्सी करना सही होगा। यदि आप अकेले हैं तो बाइक भी ले सकते हैं। इधर आपको रेत का मैदान और छोटी झाड़ियां दिखाई देती हैं जो किसी सपने की तरह लगती हैं। सम सैनड्यूंस में आपको कई तरह की एक्टीविटीज करने को मिल जाएंगी।- दुबई वाली फीलिंग देने वाली जीप सफारी- कैमल सफारी- लोकगीत और राजस्थानी डांस तो बिल्कुल ना मिस करें।- इसके अलावा, यहां पर डिनर, ब्रेकफास्ट के साथ ही कैंपिंग की भी सुविधा मिलती है। जिसे आप लोकर ही जाकर बुक कर सकते हैं। इस बात का ध्यान रखें कि यहां कैंप की ऑनलाइन बुकिंग करने से बचें नहीं तो फ्रॉड के चांस ज्यादा बढ़ जाते हैं।पाकिस्तान की सीमा से लगा ये मंदिर बेहद खास है।

भारत के सबसे अमीर सितारों में टॉप 5 की सूची में बॉलीवुड का दबदबा

साउथ से सिर्फ एक ही नाम

निज संवाददाता : बॉलीवुड से लेकर साउथ के तमाम सितारे अपनी फिल्मों और ब्रांड एंडोर्समेंट सहित कई और जरियों से खूब कमाई करते हैं और अपने बैंक बैलेंस में इजाफा करते रहते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि देश के टॉप 5 सबसे अमीर सितारों की लिस्ट पर बॉलीवुड का कब्जा है और साउथ का एक ही स्टार इस लिस्ट में शामिल हो पाया है। चलिए यहां भारत के टॉप 5 सबसे अमीर सितारों की लिस्ट जानते हैं साथ ही उनकी नेटवर्थ भी जानेंगे।

शाहरुख खान

शाहरुख खान देश ही नहीं दुनिया के सबसे अमीर एंटरटेनर के रूप में पहले नंबर पर हैं। उनकी नेटवर्थ 12 हजार 490 करोड़ रुपये (1.4 बिलियन डॉलर) है। वे भारत के पहले बिलेनियर अभिनेता है। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 में बताया गया है-बॉलीवुड के बादशाह, शाहरुख खान (59), 12 हजार 490 करोड़ रुपये की नेटवर्थ के साथ पहली बार अरबपति क्लब में शामिल हुए हैं। खबरों के मुताबिक, शाहरुख खान 2025 में बॉलीवुड के सबसे अमीर एक्टर हैं।

सलमान खान

बॉलीवुड के भाईजान यानी सलमान खान भी देश के टॉप 5 एक्टर्स की लिस्ट में शामिल हैं। वे फिल्मों, रियलिटी शो सहित कई जरियों से कमाई करते हैं। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 के मुताबिक सलमान खान की नेटवर्थ 2 हजार 900 करोड़ रुपये है।

अमिताभ बच्चन

बॉलीवुड के शहंशाह यानी अमिताभ बच्चन भारत के सबसे अमीर टॉप 5 की लिस्ट में शामिल होने वाले तीसरे एक्टर हैं। बिग बी भी फिल्मों, क्विज शो कौन बनेगा करोड़पति और ब्रांड एंडोर्सटमेंट से खूब कमाई करते हैं। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2025 के मुताबिक सदी के महानायक 1 हजार 630 करोड़ है।

अक्षय कुमार

बॉलीवुड के खिलाड़ी कुमार भी देश के सबसे अमीर टॉप 5 एक्टर्स की लिस्ट में शामिल हैं। मीडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, अक्षय कुमार की नेटवर्थ लगभग 2,500 करोड़ रुपये है। उनकी कमाई की बात करें तो, वे एक फिल्म के लिए लगभग 60-90 करोड़ रुपये लेते हैं। इसके अलावा, वे अपने प्रोडक्शन हाउस केप ऑफ गुड फिल्म्स से भी अच्छी कमाई करते हैं, जिसने एयरलिफ्ट, टॉयलेट: एक प्रेम कथा और पैड मैन जैसी हिट फिल्में बनाई हैं।

नागार्जुन अक्किनेनी

देश के सबसे अमीर टॉप 5 एक्टर्स की लिस्ट में साउथ से सिर्फ एक ही एक्टर नागार्जुन अक्किनेनी शामिल हो पाए हैं। मीडिया के आंकड़ों के मुताबिक, नागार्जुन अक्किनेनी की एक्सपेक्टेड नेटवर्थ 3 हजार करोड़ से 35 सौ करोड़ रुपये आंकी गई है। वे फिल्मों के अलावा कई अन्य सोर्स से भी खूब कमाई करते हैं।

बॉर्डर 2 का देशभक्ति से भरा ट्रेलर रिलीज

निज संवाददाता : ' गदर 2' की जबरदस्त सक्सेस के बाद, सनी देओल अपनी 1997 की देशभक्ति से भरी वॉर ड्रामा फिल्म बॉर्डर की सीक्वल 'बॉर्डर 2' के साथ बड़े पर्दे पर कम बैक कर रहे हैं। इस फिल्म को लेकर फैंस में जबरदस्त बज बना हुआ है। वहीं 15 जनवरी को आर्मी दिवस के खास मौके पर मेकर्स ने इस फिल्म का जबरदस्त ट्रेलर रिलीज कर दिया गया। ट्रेलर को देखने के बाद रगों में देशभक्ति का जज्बा दौड़ जाता है।बॉर्डर 2 में सनी देओल के अलावा दिलजीत दोसांझ, वरुण धवन और अहान शेट्टी मुख्य भूमिकाओं में हैं। फीमेल लीड के तौर पर मोना सिंह, सोनम बाजवा, आन्या सिंह और मेधा राणा को कास्ट किया गया है। फिल्म में मेजर सैनिक होशियार सिंह की असल कहानी पर फोक्स किया गया है, जिनका रोल वरुण धवन ने प्ले किया है। फिल्म के ट्रेलर की शुरुआत सनी देओल से होती है। इसमें सनी कहते सुनाई दे रहे हैं- फौजी के लिए बॉर्डर सिर्फ नक्शे पर खींची हुई एक लकीर नहीं है। बल्कि एक वादा है अपने देश से कि जहां वो खड़ा है। उसके आगे कोई नहीं जाएगा। न ही कोई दुश्मन न ही कोई गोली और न ही उसका इरादा और आज कुछ भी हो जाए हम ये वादा टूटने नहीं देंगे।इसके बाद वरुण धवन, अहान पांडे और दिलजीत दोसांझ को इंट्रोड्यूस किया जाता है। ट्रेलर देशभक्ति के जज्बे से भरा है। फिल्म का म्यूजिक भी दिल छू लेने वाला है। ट्रेलर का एक-एक सीन देशभक्ति और इमोशन्स से भरा है। ट्रेलर में 1997 में आई बॉर्डर वाली पूरी फील है। सनी देओल ने पूरे ट्रेलर में छाए हुए हैं। वहीं बाकी एक्टर्स ने भी अच्छी परफॉर्मेंस दी है। ट्रेलर का लास्ट वाला डायलॉग भी चर्चा में है। सनी देओल कहते हैं- तुम हमें क्या हराओगे, अरे तुम्हारे पाकिस्तान में इतने लोग नहीं जितने हमारे यहां ईद पर बकरे काटे जाते हैं।सनी देओल ने बॉर्डर 2 के ट्रेलर रिलीज की अनाउंसमेंट अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट पर की थी। पोस्ट में लिखा था, '' इस कहानी से बड़ी कोई और कहानी नहीं,इस जीत से बड़ा कोई और जश्न नहीं। बॉर्डर 2 का ट्रेलर आज, 23 जनवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी बॉर्डर 2। ''14 जनवरी की रात को सनी देओल ने नौसेना के जवानों के साथ समय भी बिताया था। उन्होंने सोशल मीडिया पर सैनिकों के साथ ली गई सेल्फी को भी शेयर की है इसके साथ उन्होंने लिखा है, ''हिंदुस्तान मेरी जान, मेरी आन, मेरी शान, हिंदुस्तान, गर्व, सम्मान और वीरता।''

एसआईआर के काम में बैंक अधिकारियों ने की सुरक्षा देने की मांग

निज संवाददाता : 3.25 लाख सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले बैंकिंग क्षेत्र के सबसे बड़े ट्रेड यूनियन संगठन अखिल भारतीय बैंक अधिकारी परिसंघ (एआईबीओसी) ने पश्चिम बंगाल में एसआईआर ड्यूटी को लेकर चिंता जताई है। एसआईआर ड्यूटी, बैंक अधिकारियों के लिए जी का जंजाल बन गई है। एआईबीओसी ने तनावपूर्ण/असुरक्षित माहौल में बैंक अधिकारियों को पर्याप्त सुरक्षा देने की मांग की है। पश्चिम बंगाल में 26 दिसंबर 2025 से 14 फरवरी 2026 तक, लगभग डेढ़ महीने की अवधि के लिए, बैंक अधिकारियों को मतदाता सूची सूक्ष्म पर्यवेक्षक (ईआरएमओ) के रूप में तैनात किया गया है। परिसंघ ने इस मामले में भारतीय निर्वाचन आयोग, राज्य निर्वाचन अधिकारियों और वित्तीय सेवा विभाग से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। बैंक अधिकारियों को सुरक्षा प्रदान की जाए।

49th International
Kolkata Book Fair
A warm invitation to all book lovers to visit our stall.
652
URBEE PRAKASHAN
Distributor
MOHTA PUBLISHING HOUSE
28/5, Convent Road
(Moulali)Kolkata - 700014
Email -ajaymohta66@gmail.com
Mobile: 98300 45693

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)